

भागवत् कृष्ण

साकार प्रणट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये



प्रकृतराज
सूरा खण्डवर की दुर्लभता

निष्पात्नानं भ्रतस्य देहप्रयिन्नक्षणम् । विभाष्य तेन कर्तव्या श्रीनीभविनस्तु सर्पदा ॥
महाप्रभु रथाभिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतशान का अनुशीलन करने वाली हिमायिक सत्संग पत्रिका





31 मई— भीम एकादशी के दिन अनुष्टान शिविर का शुभारंभ...

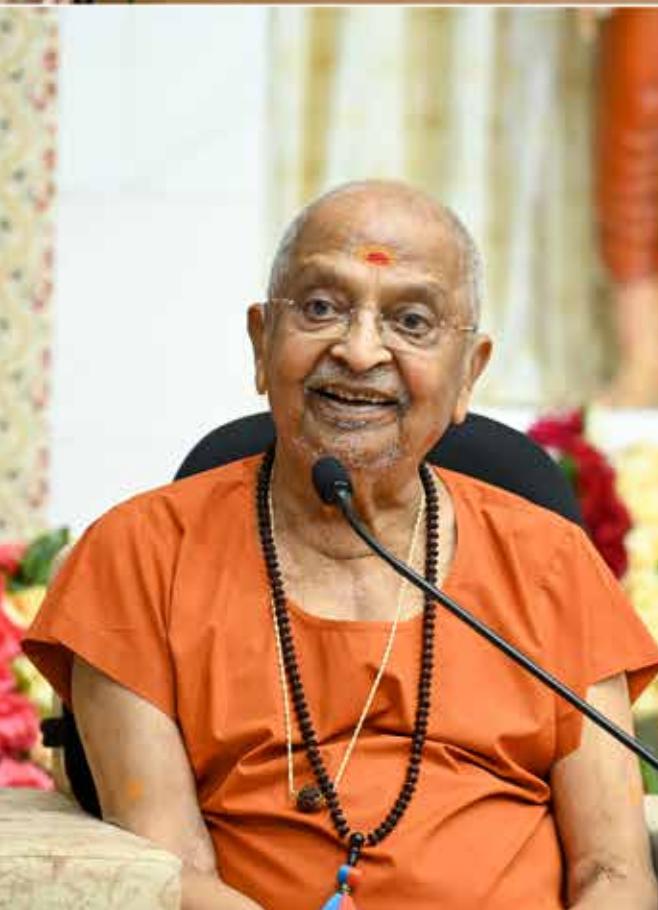


अनुष्ठान शिविर

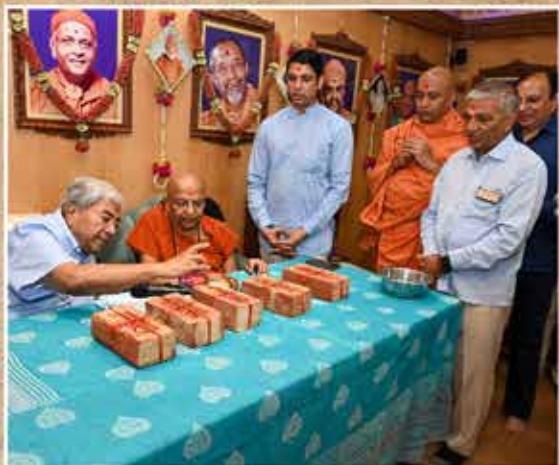
हे काकाजी! स्वामिनारायण महामंत्र का गसिया बनाना...



गुणातीत स्वरूपों द्वारा आशीर्वाद...



3 जून—यवई मंदिर में होने वाले नूतन निर्माण की ईटों का पूजन...





11 मई—लुधियाना के पू. दर्शन सिंह भट्टीजी ग्राम की सेवा के लिये प्रवृत्त हुए...





गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राक्ट्योत्सव पर अनुष्ठान शिविर की पूर्णहुति...

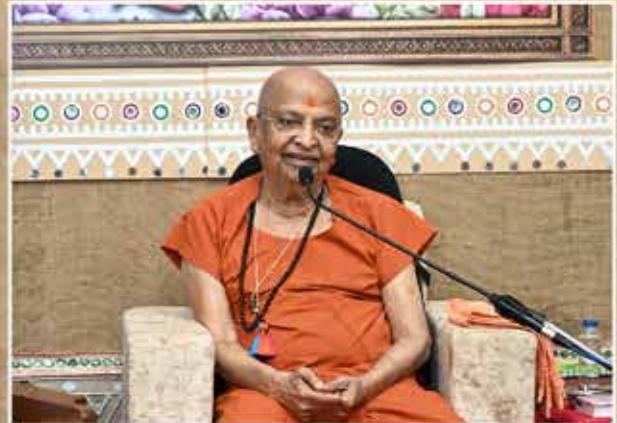




काका हे अमर रहो! हृदयाकाशे सदा रहो...



13 जून—School Certificate के मुताबिक़ प.पू. गुरुजी का प्राक्ट्रयोत्सव





गुणातीत स्वरूपों की आशिष के संग

अनुष्ठान शिविर 2023...

इस बार एक महीने के बजाय, 31 मई 2023—भीम एकादशी से 12 जून—गुरुहरि काकाजी महाराज के 105वें प्राकट्य दिन तक अनुष्ठान शिविर का आयोजन था। कल्पवृक्ष हॉल में प.पू. गुरुजी के सोफे के साथ व्यास पीठ बनाया था, जिस पर ‘अनुष्ठान शिविर’ लिखा था और कृत्रिम पत्तियों से वृक्ष बनाया था, जिसमें माला फेरते सभी स्वरूपों के करकमलों की photo गोल आकार में लगाये थे। वृक्ष के तने पर प्रार्थना लिखी थी—

हे काकाजी! स्वामिनारायण महामंत्र का रसिया बनाना...

सायं 7:00 बजे सभी कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र होते। रोज़ शिविर का कार्यक्रम इस प्रकार था— संध्या आरती एवं रत्नतिगान के बाद धुन, हिन्दी व गुजराती भजन का गायन, उसके बाद युवा एवं छोटे बच्चे पाँच ‘स्वामी की बातें’ बोल कर प्रार्थना करते। एक हरिभक्त प.पू. गुरुजी एवं व्यासपीठ पर विराजमान पू. आनंदस्वरूपस्वामीजी का पूजन करते, तत्पश्चात् पू. आनंदस्वरूपस्वामी ‘ब्रह्मप्रवाह’ हिन्दी पुस्तक में से गुरुहरि काकाजी महाराज के एक पत्र का पठन करते और प.पू. गुरुजी उस पत्र का निरूपण करते। इसके अतिरिक्त एक-दो वक्ताओं द्वारा अनुभव दर्शन के बाद विसर्जन प्रार्थना होती और प्रसादी का जल एवं प्रसाद लेकर सभी प्रस्थान करते। करीब ढाई सौ मुक्त रोज़ समय पर आ जाते और जो नहीं आ पाते, वे Internet के माध्यम से घर बैठे रोज़ शिविर का अद्भुत लाभ लेते। पत्रों का निरूपण करते हुए, प.पू. गुरुजी ने न केवल सबकी आत्मिक battery charge की, बल्कि सत्संग करते हुए सबको अपने मन-स्वभाव के कारण जो अङ्गवें आती हैं, उसका निवारण भी बताया। Technology के लिये प्रभु को धन्यवाद है कि कभी भी YouTube पर गुणातीत स्वरूपों के दर्शन के साथ-साथ, उनके द्वारा दी गई अध्यात्म सूझ से समर्थयाओं का हल पा सकते हैं...

31 मई को भीम एकादशी थी, सो सभी श्री ठाकुरजी को अर्पण करने के लिये शर्वत एवं चीनी लेकर आये थे। शिविर का आरंभ हमेशा दीप प्रज्वलन से होता है, परंतु अगले ही दिन 1 जून को संतभगवंत साहेबजी हैदराबाद से प.पू. गुरुजी को खास मिलने दिल्ली आ रहे थे और सबको पहली बार अनुष्ठान शिविर में उनका लाभ प्राप्त होना था। सो, सबकी भावना थी कि दीप प्रज्वलन उन्हों के करकमलों से करवायें। शिविर की इस प्रथम सभा में पू. भद्रायुभाई जानी एवं पवई से पथारे पू. अश्विनभाई ने प्रासंगिक उद्बोधन किया और प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह के एक पत्र का निरूपण किया।

1 जून की सायं शिविर में संतभगवंत साहेबजी, सद्गुरु संत प.पू. मनोजदासजी (UPSC Chairman) एवं मुक्तों के साथ पथारे। धुन-भजन के बाद, पू. राकेशभाई शाह ने सभी की ओर से प्रार्थना की और पू. सुहृदस्वामीजी एवं पू. कौशिकभाई जानी ने हार अर्पण करके उनका





स्वागत किया। फिर संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं सद्गुरु संत प.पू. मनोजदासजी ने दीप प्रज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह के पत्र का निरूपण करते हुए आशीष दी, सद्गुरु संत प.पू. मनोजदासजी ने शिविर के सूत्र — हे काकाजी! स्वामिनारायण महामंत्र का रसिया बनाना... के आधार पर प्रार्थना की और संतभगवंत साहेबजी ने गुणातीत स्वरूपों के प्रसंगों का वर्णन करते हुए आशीर्वाद दिया।

2 जून की सायं पृष्ठभूमि पर गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ संतभगवंत साहेबजी की मूर्ति निम्न प्रार्थना के साथ लगाई थी—

हे साहेबजी! आपने केवल बापा की ओर दृष्टि रख कर, गुरुमुखी जीवन जिया

ऐसे हम गुरुजी के प्रति समर्पित हो जायें, आप हमें ये आशीष देना...

सभा में संतभगवंत साहेबजी ने ब्रह्मप्रवाह के एक पत्र का निरूपण करते हुए आशीर्वाद दिया और सद्गुरु संत प.पू. मनोजदासजी ने प्रभुधारक संतों द्वारा भगवान स्वामिनारायण के प्रगटीकरण का उल्लेख करते हुए सभा का समापन किया। देर रात को पवई से प.पू. वशीभाई दिल्ली मंदिर पथारे।

3 जून की सुबह संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई ने मंत्र पुष्पांजलि - धुन करके, पवई मंदिर में आगामी समय में होने जा रहे construction की ईंटों का पूजन किया। दोपहर को सभी सद्गुरु संत प.पू. मनोजदासजी के UPSC office गये। वहाँ धुन की ओर उनके द्वारा भावपूर्ण हृदय से परोसे गये अल्पाहार को ग्रहण करके, संतभगवंत साहेबजी ने Airport के लिये प्रस्थान किया। प.पू. गुरुजी, प.पू. वशीभाई एवं साथ में गये मुक्त उन्हें विदाई देने के लिये Airport गये और फिर मंदिर लौटे। सायं शिविर में प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह के पत्र का निरूपण किया। पवई मंदिर में शनिवार की सभा में वचनामृत का पठन करते हुए, प.पू. भरतभाई या प.पू. वशीभाई उसका निरूपण करते हैं। सो, **लोया 13 वचनामृत (अचल सिद्धांत)** पढ़ते हुए, प.पू. वशीभाई ने व्यासपीठ पर बैठ कर सरल भाषा में निरूपण किया।

4 जून की सायं, शिविर के चौथे दिन प.पू. वशीभाई एवं पू. अश्विनभाई के सान्निध्य में धुन-भजन हुआ। तत्पश्चात् वचनामृत के संदर्भ में ‘प्रत्यक्ष की उपासना’ की बात करते हुए, प.पू. वशीभाई ने गुरुहरि काकाजी द्वारा लिखे एक लेख को पढ़ कर बताना शुरू किया कि प्रत्यक्ष के उपासक साधकों से प्रभु क्या अपेक्षा रखते हैं? तभी प.पू. गुरुजी ने कल्पवृक्ष हॉल में प्रवेश किया। प.पू. गुरुजी के विराजमान होने के बाद, प.पू. वशीभाई ने अपना प्रवचन जारी रखते हुए बहुत अच्छी तरह सूत्रात्मक रीति से सबको समझाया। तदोपरांत प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह का पत्र समझाते हुए, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की कही बातों की स्मृति करते हुए कहा—

कुछ भी करने से पहले प्रभु और प्रत्यक्ष स्वरूप को ज़रूर याद करें...

दो दिन मुक्तों को आध्यात्मिक सूझा देकर, 5 जून की सुबह प.पू. वशीभाई एवं पू. अश्विनभाई मुंबई लौट गये... तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी रोज सायं ब्रह्मप्रवाह में से पत्र समझाते।



31 मई 2023 को लुधियाना के पू. दर्शन सिंह भट्टी साहेब सरकार की सेवा से निवृत्त हो रहे थे। उन्हें इच्छा हुई कि अपने जीवन के इन पलों को प.पू. गुरुजी और मुक्तों के साथ उत्सव के रूप में मना कर, प्रभु की सेवा के लिये प्रवृत्त होना है। सो, दिल्ली आने के लिये उन्होंने पंजाब में रहते सत्संगियों के लिये **बस** arrange करी। **11 जून** की दोपहर को अपनी पल्ली पू. रणजीत भाभी, सुपुत्र पू. प्रिन्स, जो कि प.पू. दीदी की आङ्गा से surprise में canada से आया एवं करीब 50 मुक्तों के साथ वे दिल्ली मंदिर पथारे। सायं प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पू. भट्टीजी को हार, आशीर्वाद पत्र, सेवक की ड्रेस-बैंज, वचनामृत और घड़ी देकर सम्मानित नहीं, बल्कि गुरुहरि काकाजी की नारायणी सेना के सैनिक के रूप में भर्ती किया गया। पू. भट्टीजी एवं उनके सुपुत्र ने जिस प्रकार आशिष याचना की, उससे ख्याल पड़ता था कि उनके जीवन में प.पू. गुरुजी और सत्संग का क्या स्थान है! उनकी भावना वाक़ई एहसास कराती थी कि कई मुक्त भले ही मूक व छिपे रह कर सेवा करते हैं, पर उनके भीतर प्रभु की जो भक्ति भरी होती है, उसका अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। हमारे ऐसे आवरणों को तोड़ने के लिये प्रभु को कोटि-कोटि धन्यवाद है।

12 जून—गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकृत्य दिन के मंगलकारी दिन, सुबह 9:00 बजे महापूजा एवं प.पू. गुरुजी की पूजा का सबने लाभ लिया। वर्षों से गुरुहरि काकाजी के प्रागृत्य दिन के अवसर पर ख्रास ‘आम रस’ का प्रसाद होता है। इसके लिये गुजरात-एरु के पू. कौशिकभाई देसाई केसर आम भेजते हैं। पर, इस बार तो प.पू. गुरुजी की आङ्गा से वे खुद भी आये। प.पू. गुरुजी की पूजा में आम से सजावट की थी और शाम की मुख्य सभा में जिस पेड़ पर माला फेरते स्वरूपों के हस्तों की मूर्तियाँ थीं, उसकी बजाय कृत्रिम ‘आम’ प्रतीक रूप लगाये गये थे। प.पू. गुरुजी के आसन के ऊपर, गुरुहरि काकाजी के साथ प.पू. गुरुजी की मूर्ति लगाई थी, जिसके नीचे लिखा था— **मैं हूँ ना!**

पू. श्रेयस (चेतन) शर्मा की गोद में उनके बेटे पू. नमन को पेड़ से आम तोड़ने का प्रयास करता हुआ cutout जिस भावना से लगाया था, वो प्रार्थना पू. राकेशभाई ने सभी की ओर से करी— जब कोई छोटा बच्चा फल तोड़ने के लिये ज़िद्द करता है और वह तोड़ने में असमर्थ होता है, तब उसके पिता गोद में लेकर उसे वहाँ तक पहुँचा देते हैं। बच्चा जब भी किसी मुसीबत में होता है, तो अपने माता-पिता को याद करता है, उनकी ओर जाता है। उसे एक भरोसा होता है कि मेरे माता-पिता हैं ना, तो मुझे कुछ नहीं होने वाला... हमने भी अपने जीवन में देखा है कि कोई तकलीफ या मुसीबत आई हो, तब प.पू. गुरुजी से बात करी हो या ना करी हो, पर उन्हें जब पता चला है, तो उन्होंने हमारी उस समस्या को हल किया है। इसीलिये हमें एक भरोसा है कि प.पू. गुरुजी हैं ना! कई बार उन्हें कहते हुए सुना-देखा है— **क्यों चिंता करते हो, मैं हूँ ना!** यहाँ जिस ‘मैं’ की बात हो रही है, वो यह कि प.पू. गुरुजी के रूप में सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान, परब्रह्म तत्त्व हमें assurance दे रहे हैं कि तुम क्यों चिंता करते हो, मैं हूँ ना





तुम्हारे साथ... सहजानंदस्वामी ने खबरं वरदान दिया कि अपने संतों द्वारा में प्रगट रहूँगा और आप सबका ध्यान रखूँगा। तो, वो एक भरोसा और assurance सबको है। काकाजी अकसर कहते थे कि बिल्ली का बच्चा बस म्याऊँ-म्याऊँ करता है, तो बिल्ली चाहे कहीं भी हो अपने बच्चे के लिये दोड़ी चली आती है। तो, हमें भी मुसीबत में सिर्फ पुकार करनी है—**भजन करना है।** काकाजी-गुरुजी यहाँ बैठे ही हैं, वे हमारे साथ हैं, हैं और हैं। सहजानंदस्वामी हमारे साथ हैं, हैं और हैं...

पू. संदीप मरोड़ियाजी के संपर्क से दिल्ली से भाजपा पार्टी के राजनेता **श्री विजेंद्र गुप्ताजी** आये थे। **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने हार पहना का उनका खागत किया। बच्चों में संस्कारों का सिंचन हो, इस हेतु आज सबद्वी कलां-पंजाब के **पू. हर्ष भार्गव** ने ‘स्वामी की बातें’ बोल कर प्रार्थना करी। **पू. हृदय वर्मा** ने भजन प्रस्तुत किया। **श्री विजेंद्र गुप्ताजी** ने सभा को संबोधित करके विदाई ली और जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी** ने भजन गाया। तत्पश्चात् व्यासपीठ पर विराजमान होकर **पू. आनंदस्वरूपस्वामीजी** ने ‘ब्रह्मप्रवाह’ में से पत्र पढ़ना शुरू किया। करीब 10 दिन **प.पू. गुरुजी** ने ब्रह्मप्रवाह के गूँढ़ रहस्यों को उजागर किया और आज अध्यात्म कुंजी देते हुए आशीष दी—

...सभी मुक्त अपने स्वभाव से परे हो जायें। स्वभाव रखेंगे, तो सुहृदभाव से काम नहीं कर पायेंगे। स्वभाव छोड़ देंगे, तो एक-दूसरे के साथ मिल कर काम कर पायेंगे। दूसरों की मरक्की में हम चल पायेंगे। इसका परिणाम यह आयेगा कि बापा का कार्य चमक उठेगा। बापा का एक ही संदेश था—संप, सुहृदभाव, एकता से रहो। काकाजी इसे ही जीवनभर दोहराते रहे। काकाजी इसे निर्देषबुद्धि और दिव्यभाव कहते। काकाजी यानि— दिव्यता, दिव्यता, दिव्यता... हम अपने स्वभाव छोड़ देंगे, तो हमें किसी का कुछ भी बुरा नहीं लगेगा...

...काकाजी कहते कि हमारा संकल्प-आशीर्वद है कि दिल्ली में मंदिर होने के बाद मिलजुल कर-एकता से कार्य करेंगे, तो विश्व में गुणातीत ज्ञान का संदेश यहाँ से फैलेगा। उसके लिये एक शर्त है कि जो भी संपर्क में आयें, उनके प्रति सद्भावना और आपस में सुहृदभाव रखना तथा ‘जोड़’ में काम करना। एक ऐसा partner बना लेना, जिसके साथ मिल कर सत्संग का कार्य कर सकें। वर्ना अपनी अस्मिता में रह कर सत्संग कराने का pattern छोड़ नहीं पायेंगे। जोड़ में रह कर कार्य करेंगे, तो मिलजुल कर कार्य करने का तरीका आ जायेगा... सभी सत्संगी कुटुंबभाव से जियें, वो ही सच्चा सत्संग है...

प.पू. गुरुजी ने जो आशिष वर्षा की, उससे सभी का अंतर तृप्त हो गया और फिर... पृष्ठभूमि पर लिखित मार्मिक वाक्य—‘मैं हूँ ना...’ की गहराई को **प.पू. गुरुजी** के साथ के अपने निजी प्रसंग का उल्लेख करते हुए, सेवक **पू. अभिषेक** ने आशीष याचना की। तत्पश्चात् आज की theme के ही आधार पर अक्षरज्योति की साधिका **पू. नित्या दीदी** ने **पू. राकेशभाई** के साथ मिल कर भजन—‘भक्त से हैं कहते भगवान, मैं हूँ ना...’ बनाया था, जिसे **पू. डॉ. दिव्यांग** ने



प्रस्तुत किया। तदोपरांत गुरुहरि काकाजी के समय के पुराने दो जोगी, जगरांव के पू. नरेन्द्र शर्माजी एवं नोएडा के पू. चाँदप्रकाशजी ने प्रासंगिक उद्बोधन किया और लुधियाना के पू. विपिन कठारिया स्वानुभव से प्रार्थना की।

मुंबई की पू. डॉली दीदी 'मोरपंखों' से विशिष्ट हार बना कर लाई थी, सभा के प्रारंभ में ही वह गुरुहरि काकाजी को अर्पण किया था। गुरुहरि काकाजी के कृपापात्र सबद्धी कलां-पंजाब के अक्षरनिवासी पू. सुरेशजी के पौत्र पू. सूरज और दिल्ली के पू. अभय यादव ने गुरुहरि काकाजी स्वरूप प.पू. गुरुजी को सभी की ओर से यह हार अर्पण किया। तत्पश्चात् प्रसादी का यह हार उत्तरभारत की बहनों की प्रेरणामूर्ति प.पू. दीदी को पू. शोभना भाभी ने अर्पण किया। प.पू. गुरुजी के हमारे जीवन में होने से जो निश्चिंतता है, उसकी बात करते हुए पू. चाँदप्रकाशजी ने अपने वक्तव्य में पुराने गाने—

सईया दिल में आना रे, आ के फिर ना जाना रे... छम छमा, छम छम...
तुम मेरे पास होगे, ग़म बड़ी दूर होगा...

का ज़िक्र किया था और मर्स्टी में थोड़ा नाच कर भाव प्रकट किया था। सो, सभा के अंत में प.पू. गुरुजी के कहने पर पुनः इस गाने पर नाच कर उन्होंने सभी को आनंदविभोर कर दिया। मुंबई के पू. अनिलभाई माणेक और पू. ओ.पी. अग्रवालजी भी हमेशा की तरह अपने आपको रोक नहीं पाये और उन्होंने पू. चाँदप्रकाशजी का साथ दिया। साथ ही अन्य मुक्त भी अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए नाचने लगे। प.पू. गुरुजी की एक दृष्टि हमेशा प्रभु एवं गुणातीत स्वरूपों के सिद्धांतों की ओर ही रहती है। भगवान् स्वामिनारायण द्वारा शिक्षापत्री में वर्णित बात के भावार्थ अनुसार, जो व्यक्ति जिस सम्मान के योग्य हो, उसे वह देना भी भवित है। सो, Music बंद होने के बाद, प्रेमीहृदय पू. चाँदप्रकाशजी का परिचय और आशीर्वाद देते हुए प.पू. गुरुजी ने नये-पुराने सभी मुक्तों से कहा—

अभी, आपने ये चाँद साहेब को *dance* करते देखा। बेशक वो पहले T.V. Artist भी रह चुके हैं। पर, ये *ordinary* आदमी नहीं हैं। आपने नाम सुना होगा *Hindustan Traders... Green Park* में वो दुकान है। जैसे सब्जी मंडी में सब्जी की दुकान के बाहर आलू की बोरियाँ पड़ी रहती हैं, वैसे इनकी दुकान के बाहर *fridge* पड़े रहते थे। ये चाँदप्रकाश साहेब काकाजी के समय से हमारे *contact* में हैं। लेकिन, वो यहाँ आते हैं, तो अपनी *consciousness* भी भूल जाते हैं और एकदम काकाजीमय हो जाते हैं। वो एक करिश्मा हैं... सहजानंदस्वामी महाराज की जय। कई मुक्तों के आज के शुभ प्रसंग थे, सो पू. राकेशभाई ने वो याद करते हुए सभी की ओर से शुभकामनायें दीं और फिर विसर्जन प्रार्थना से अनुष्ठान शिविर एवं गुरुहरि काकाजी के प्राकट्योत्सव की पूर्णाहुति हुई। पूरे वर्ष जिस 'आम रस' के महाप्रसाद की सब राह देखते हैं, वह सबने लिया। पंजाब से आये अधिकतर मुक्त रात को ही बस से लौट गये।





School certificate के अनुसार 13 जून को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन होता है। सो, सायं कल्पवृक्ष हॉल में स्थानिक मुक्त इसे मनाने के लिये एकत्र हुए। धुन-भजन के बाद, इस मंगलकारी दिन पर पू. नक्षत्र शाह (नक्षु), पू. सुशील भारकरजी, पू. समीरभाई दवे एवं पू. मैत्रीस्वरूपस्वामी ने अंतर्दृष्टि के प्रसंगों को निखालिस मन से बताते हुए प्रार्थना की।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने खूब कृपा करके मार्मिक टकोर करते हुए आशीर्वाद दिया—
आशीर्वाद कुछ नये देने हैं नहीं। हम सबका एक ही निशान होना चाहिये। क्योंकि हम काकाजी-पप्पाजी के हैं। इन्होंने हमेशा एक ही बात प्रसराई कि संबंध वाले मुक्तों के प्रति दिव्यभाव रखते हुए, हम इनसे एकता रखें। संप और सुहृदभाव तो हम काफी समय से सुनते ही रहते हैं। तो, सहज ही डर के कारण मन में बैठ गया है कि हमें किसी से मन-मुटाव या झगड़ा नहीं करना है। मुक्तों के साथ संप और सुहृदभाव से रहना है। पर, उनके साथ मिलजुल कर रहने में कठिनाई आती है। आज के दिन काकाजी से खास ये प्रार्थना करनी है कि हमारा मन इनसे कभी अलग ना हो। मन अलग होता है, इसलिये हम इनके साथ मिलजुल कर नहीं रह सकते। हम इनसे भिड़ते नहीं हैं— झगड़ा नहीं करते, लेकिन इनके साथ मिलजुल कर काम करना, रहना, सामने से उनके पास जाना, वो हम नहीं कर पाते। तो, आज की पहली प्रार्थना ये कि हम मिलजुल कर रहें। एक-दूसरे के पूरक बन कर रहें। सामने वाले मुक्त को हमें बुलाना ना पड़े। उन्हें हमारी ज़रूरत हो, तो देख कर या भीतर में महसूस करके हम इनके काम में सहाय रूप हों; इतना ही नहीं, इनका काम हम पूरा करने में जी-जान लगा कर लगे रहें। वो हमने सच्चा सत्संग किया। बाकी तो मंदिर में आये और गये। ऐसा सत्संग तो खूब चलता रहा। लेकिन अब यही नया आग्रह रखना है कि हम एक-दूसरे के पूरक बन कर, एक-दूसरे का काम निपटाने में सामने से जायें और लगे रहें। ऐसा करवा कर काकाजी हमारी जल्द से जल्द पूर्णहुति करा दें, यही प्रार्थना और काकाजी के पास आशीर्वाद की याचना।

प्राकट्य दिन निमित्त प.पू. गुरुजी के लिये विशिष्ट हार बनाया था। ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी के परम कृपापात्र एवं उनसे सर्वदेशीय सेवा की क़वायत पाये पू. कौशिकभाई देसाई (एरु) ने प्रार्थना करके, सभी की ओर से प.पू. गुरुजी को यह हार अर्पण किया। आज पू. सरयूस्वामी का भी जन्मदिन था, सो प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का यह हार स्वयं उन्हें पहनाया। तब सहज ही प.पू. गुरुजी ने पू. राकेशभाई से कहा—

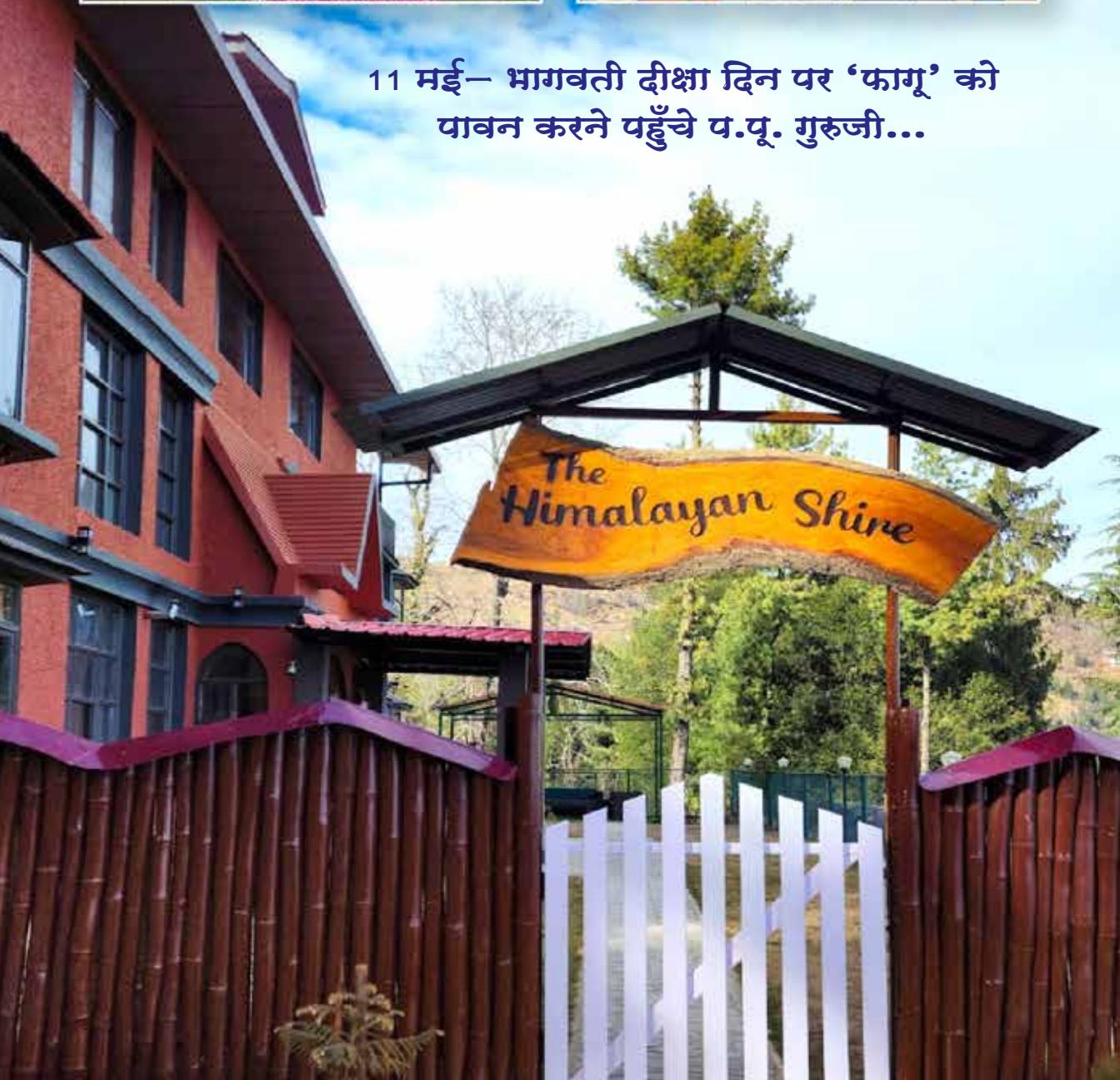
सबको परिचय तो कराओ कि सरयूस्वामी कौन हैं?

पू. राकेशभाई ने बताया कि— वैसे तो सभी जानते हैं, फिर भी बता रहे हैं कि सरयूस्वामी, प.पू. गुरुजी के भतीजे हैं...

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी को सत्संग के छोटे-बड़े बच्चों ने खुद बनाया हुआ कार्ड अर्पण किया। कार्ड पर लिखी प्रार्थना पू. राकेशभाई ने पढ़ी। अंत में प.पू. गुरुजी को केक अर्पण किया गया और विसर्जन प्रार्थना के बाद सबने प्रसाद लिया।



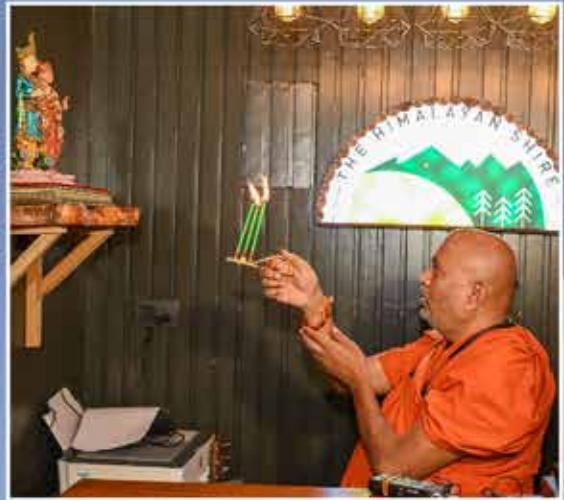
11 मई— भागवती दीक्षा दिन पर ‘फागू’ की
पावन करने वाले यहाँ चे य.पू. गुरुजी...



12 मई, सुबह—धुन, भजन, प्रार्थना से तीर्थत्व प्रदान किया...



12 मई, सायं – महापूजा...





नम का सूरज, मैं भी सूरज
और तुम्हारे हृदय सूर्य जो
जाओ तीनों एक आज से
काका से आशिष मिले जो
शक्तिपात कर दिया गुरु ने
निर्बध और स्वाधीन बनाया...



सूर्योदय का दर्शन...



गुरुहरि काकाजी
की आशिष याये
य.पू. गुरुजी
रूपी सूर्य से
हमारा जीवन
उजियारा है...



13 मई, सुबह
य.पू. गुरुजी के सान्निध्य में
च्यारे नमन का Birthday Celebration





13 मई, सायं—सत्संग सभा के साथ-साथ आनंदोब्रह्म...





हे माँ! तेरे दर्श से अलग
भगवान की मूर्ति क्या होगी...



HAPPY
Mother's
DAY



14.05.2023

‘कागू’ की स्मृतियाँ...



युनीतजी के यारिवार को दृढ़ता हो गई है कि
हम सत्संग के हैं और गुरुजी हम सबके मुखिया जैसे हैं...

- प.पू. गुरुजी





14 मई—देर रात्रि को आनंद-किल्लील...





प.पू. गुरुजी का 'फागू' विचरण...

प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार गुरुहरि काकाजी महाराज के आशीर्वाद से, निष्ठा वाले मुक्त परिवार सहित दिल्ली मंदिर से किसी न किसी के संपर्क से खूब आत्मीयता से जुड़ जाते हैं। ऐसे ही पू. कीर्तिभाई जानी के संपर्क से पू. पुनीत गोयलजी सपरिवार प.पू. गुरुजी से केवल जुड़े ही नहीं, बल्कि अभिन्न अंग बन गये। प.पू. गुरुजी अपने आशीर्वचन में अकसर कहते हैं कि यदि माता-पिता ने जीव से सत्संग किया होगा, तो उनके बच्चे भी उसी राह पर चलेंगे। सो, जैसे कि पू. पुष्पा गोयलजी (पू. पुनीतजी की मातुश्री), पू. पुनीत गोयलजी-पू. अंजलिभाभी एवं इनके छोटे भाई पू. नवनीत गोयलजी-पू. महकभाभी ने प.पू. गुरुजी व सत्संग को प्राथमिकता देते हुए, जीवन का प्रत्येक कार्य करने की जीवनशैली बनाई है। तो, इन्हीं संस्कारों का सिंचन उन्होंने अपने बच्चों पू. वैभव, पू. ऋषभ, पू. मुग्धा और पू. मीनल में किया और अब दो वर्ष पहले घर में आई पू. वैभव की पत्नी पू. पंखुड़ी भी इसी राह पर अग्रसर है।

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद तथा अपने परिवार की रजामंदी व सहयोग से और सत्संगी बंधु पू. गौरव गर्जी की सलाह से, पू. ऋषभ गोयल ने इसी साल जनवरी महीने में, शहर की भागदौड़ से दूर असीम शांति का एहसास कराते शिमला के पास 'फागू' में **The Himalayan Shire - Home Stay** बनाया है। नया कार्य आरंभ करते हुए भक्तों की यही भावना होती है कि पहले प्रभु एवं गुरुजी की आशीष प्राप्त हो। सो, पू. ऋषभ की आंतरिक इच्छा पूर्ण करने और **The Himalayan Shire** को धुन, भजन, प्रार्थना से तीर्थत्व प्रदान करने, तारीख के अनुसार प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन—11 मई से 15 मई 2023, करीब 70 मुक्तों के साथ 'फागू' जाने का कार्यक्रम बनाया।

10 मई की सुबह पू. सुहृदस्वामीजी-पू. मैत्रीस्वामीजी, कुछ मुक्तों के साथ पूर्व तैयारी के लिये 'फागू' गये। दोपहर को 'Vanity Van' में दिल्ली मंदिर से रवाना होकर, प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ रात को पंजाब के मोहाली ज़िले के **Regenta Place** में ठहरे। अन्य सभी 11 मई की सुबह निकले और दोपहर को धर्मपुर-सोलन के गोपाल रेस्टरां में भोजन किया। तभी प.पू. गुरुजी भी मोहाली से यहाँ सभी को दर्शन देने पहुँच गये। फिर तो प.पू. गुरुजी की 'Vanity Van' के पीछे-पीछे सभी चल पड़े। सायं 6:00 बजे 'फागू' के **The Himalayan Shire** पहुँचे, जहाँ पू. पुनीत गोयलजी, पू. अंजलिभाभी एवं पू. ऋषभ गोयल बेसब्री से प.पू. गुरुजी की राह देख रहे थे। पूर्व तैयारियों के लिये पहुँचे मुक्तों ने फूलों की लड़ियों से सजावट की थी और प्रवेश द्वार पर गुलाब की पंखुड़ियों से गलीचा बनाया था तथा भजन की पंक्तियाँ लिखी थीं—





मङ्ग्या हरि रे अमने मङ्ग्या हरि... संतखरुपे आजे पोते आवीने अमने मङ्ग्या हरि...

आठ कमरों का **The Himalayan Shire** एक घर की प्रतिकृति है, सो मानो गृह प्रवेश की भावना से पू. ऋषभ ने आरती करनी चाही, तो तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने उसे इशारे से काउंटर पर विराजमान श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति की आरती करने के लिये कहा। आरती के बाद प.पू. गुरुजी **Sitting Room** में विराजमान हुए और अल्पाहार लिया। 70 मुक्त एक ही जगह तो ठहर नहीं पाते, सो पू. ऋषभ ने नज़दीक के अन्य दो **Home Stay**—वशिष्ठ और तलाई घर में भी ठहरने की व्यवस्था की थी। भोजन की व्यवस्था The Himalayan Shire के बाहर लगे Tent में थी। रात का भोजन करके सभी अपने-अपने स्थान पर गये।

The Himalayan Shire एवं अन्य Home Stays से ‘भोर-सूर्योदय’ का बहुत सुंदर दर्शन होता है और शांत वातावरण में दिव्यता का एहसास होता है। 12 मई सुबह सभी ने अपनी-अपनी जगह से यह अद्भुत नज़ारा देखा। प.पू. गुरुजी की पूजा में सभी The Himalayan Shire में एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के सोफे के पीछे गुजराती भजन की पंक्तियाँ प्रार्थना रूप लिखी थीं—

**केम विसलं प्रेम आ तारो, हैये दिव्य आनंद प्रगटाव्यो...
ओ प्राण पुरुष तुं अमारो, जीवन साथी भव-भवनो...**

पूजा के बाद सभी सूर्योदय की बात कर रहे थे, तो प.पू. गुरुजी ने कहा—

कल सभी यहाँ इकट्ठे होना, एक साथ सूर्योदय देखेंगे।

तब किसी ने सहज ही कहा—गुरुजी! जो जहाँ ठहरे हैं, उन्हें वहाँ से भी दिखता है।

तब **काकाजीमय** प.पू. गुरुजी ने तुरंत कहा—

वहाँ तुम्हें एक सूर्य देखने को मिलेगा और यहाँ दो-दो सूर्य देखने को मिलेंगे।

एक वो सूर्य और एक मैं!

वर्षों से प.पू. गुरुजी की जीवनशैली देखी है कि वे हमेशा अपना स्वरूप छिपा कर रखते हैं। पर, यह बात भी इतनी ही सत्य है कि प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत तो प्रभु के वश ही वर्तते हैं। सो, मर्म में उन्होंने ना केवल अपने स्वरूप का दर्शन कराया, बल्कि गुरुहरि काकाजी के साथ के उनके निम्न प्रसंगों की स्मृति ईदम हो गई कि किस प्रकार गुणातीत स्वरूपों के साथ उनके संबंध की शुलआत ही सूर्य की बात से हुई—

15 दिसंबर 1953 को प.पू. गुरुजी ने युवा अवस्था में गुरुहरि योगीजी महाराज व गुरुहरि काकाजी का प्रथम दर्शन मुंबई के सुंदराबाई हॉल में किया था और फिर... गुरुहरि योगीजी



महाराज की मूर्ति लेने के लिये वे गुरुहरि काकाजी के ऑफिस गये थे। तब मूर्ति देते हुए गुरुहरि काकाजी ने कहा था—

धरती पर एक सूर्य है, बापा भी एक सूर्य हैं और उनकी कृपा से मैं भी एक सूर्य हूँ...

फिर... 1986 में 25 जनवरी की सुबह गुरुहरि काकाजी ने सोखड़ा मंदिर में प.पू. कोठारीस्वामीजी एवं प.पू. गुरुजी की छाती पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया था—

वो आकाश का सूर्य, मेरे हृदयाकाश का सूर्य और तुम्हारे हृदयाकाश का सूर्य...

जाओ, आज से तीनों एक!

सच, हम कितने भाग्यशाली हैं कि गुरुहरि काकाजी की आशीष पाये प.पू. गुरुजी रूपी सूर्य ने अपने प्रकाश से हमारा जीवन उजियारा किया है। सो, अंतर से प्रार्थना करते हैं कि—

धरती पर सूरज हो तुम, मैं तेरे तेज की धारा बनूँ... तेरा बन के जीऊँ... धन्यवाद करूँ!

12 मई को पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी और पू. श्रेयस (चेतन) शर्मा के बेटे पू. नमन ने हिमाचली टोपी पहनी हुई थी। प.पू. गुरुजी ने मज़ाक करते हुए पू. नमन से कहा कि मेरे लिये भी ऐसी टोपी ले आ। तो, वह अपने पापा-मम्मी के साथ बाज़ार जाकर पाँच टोपियाँ अलग-अलग रंग व डिजाईन की लेकर आया। मुक्तों को स्मृति देने के लिये प.पू. गुरुजी ने बारी-बारी से सारी टोपियाँ पहनी। फिर तो प.पू. गुरुजी ने एक टोपी पसंद करके पहने रखी और एक-एक करके सभी संतों एवं उपस्थित हरिभक्तों को भी बाकी की टोपियाँ पहना कर फोटो खींचवाई। करीब एक घंटा ये सारा प्रोग्राम चला। तत्पश्चात् दोपहर को प्रसाद लेकर सभी अपने ठहरने के स्थान पर गये और सायं 6:00 बजे महापूजा का लाभ लेने प.पू. गुरुजी के पास आये। महापूजा संपूर्ण होने के बाद पू. पुनीतजी एवं पू. ऋषभ ने प.पू. गुरुजी को एवं पू. अंजलि भाभी ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया। फिर पू. ऋषभ ने प.पू. गुरुजी का धन्यवाद करते हुए प्रार्थना की और **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

यहाँ आकर मुझे अच्छा लगा और... जैसे कहते हैं कि मोर के अंडे रंगने नहीं पड़ते। मोर के बच्चे रंगीन पंखों वाले ही होते हैं। वैसे ही आत्मीयता से युक्त पुनीतजी और अंजलि भाभी का जो सर्जन (वैभव, ऋषभ और पंखुड़ी) है, वो सत्संग के अंदर आत्मीयता से ही मिलजुल जायेगा। रात का प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने विश्राम स्थान पर गये।

13 मई की सुबह 5:15 बजे सूर्योदय का दर्शन करने के लिये सभी The Himalayan Shire आ गये। 1981 में भगवान् स्वामिनारायण की द्विशताब्दी निमित्त गुरुहरि काकाजी ने प्रसिद्ध गीतकार श्री नक्ष लायलपुरी से श्रीजी महाराज की जीवनी हिन्दी में बनवा कर record





करवाई थी। पू. आशिष ने इसी दौरान उसकी audio चलाई और इसे संयोग नहीं, प्रभु का ही हमारे लिये संकेत कहा जाये कि वे अपने धारक संत द्वारा धरती पर मौजूद हैं। जैसे ही सूर्य उदित होना आरंभ हुआ कि पहले से बज रहे भजन में निम्न पंक्तियाँ आईं—

सूर्य किरण फूटे, तो हो उजियासा चारों ओर,
भव्य प्राप्ति को हम समझें, तो रहे आंनदविभोर,
कभी उदासी, सूनापन न करे हमें कमज़ोर,
चिंता, भय, दुःख, शोक मिटे, जो बांधे तुझ्न संग डोर...

धुन करके, सूर्योदय की तेजस्वी किरणों का प्रकाश देखने के बाद नित्यक्रम से फ़ारिंग होकर, पुनः सभी प.पू. गुरुजी की पूजा में एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के सोफे के पास गुजराती भजन की निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं—

प्राण-प्रतिष्ठा तारी करवी, मारा रोमे-रोमे
अहम् दर्पण तोड़ी नाखो, देह केरी भोमे
तारा नयनने जोवा राखुं, खुल्लां नयन द्वार...

आज पू. नमन का जन्मदिन था। सो, उसे खुश करने सेवकों ने Spiderman, Super Hero जैसे poster और गुब्बारे लगाये थे। प.पू. गुरुजी की पूजा के पश्चात् केक अर्पण हुआ और 6 साल के पू. नमन ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करी कि— मेरे जीवन में हमेशा आप पहले स्थान पर रहना।

प.पू. गुरुजी ने उससे पूछा— यदि मैं कुछ कहूँ और मम्मी मना कर दे, तो क्या करेगा?

पू. नमन ने दो मिनिट सोच कर कहा— आपकी बात माकूँगा।

गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति कराते हुए प.पू. गुरुजी ने उससे कहा— साधु बनेगा?

पू. नमन ने ‘हाँ’ कह दी, तो प.पू. गुरुजी ने उसे फल का प्रसाद दिया। पर, थोड़ी देर में वह रोने लगा कि साधु नहीं बनना है। फिर प.पू. गुरुजी ने उसे साधु ना बनने का प्रसाद दिया, तो वह चुप हो गया। बाह्य दृष्टि से यह प्रसंग मज़ाक लगेगा, पर प.पू. गुरुजी जैसे सत्युरुष तो चेतना देखते हैं और दूसरी ओर पू. नमन पूर्व का बलिष्ठ मुक्त होगा तथा उसके पिता पू. श्रेयस व मम्मी पू. श्रेया भी उसमें उच्च संस्कारों का कैसा सिंचन कर रहे हैं, वर्ना 6 वर्ष की आयु के बच्चे को क्या रख्याल पड़ता है कि गुरुजी जो कहें, उसमें ‘हाँ’ ही करनी है।

दोपहर को सभी ने प्रसाद लिया। शाम को सब प.पू. गुरुजी के पास एकत्र हुए। सेवक पू. विश्वास, पू. ऋषभ गोयल ने भजन प्रस्तुत किये। पू. पुनीत गोयलजी एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी



(मुंबई) ने अनुभव दर्शन कराया और... प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद बरसाये—
ये सत्संग जलप्रवाह जैसा है। नायगरा फॉल का प्रवाह बहता है, तो उसमें सब स्नान करते ही रहते हैं। कितने हजारों टन पानी कभी लकता नहीं है। ऐसे ये साधु—काकाजी का प्रेम बहता ही रहता है, बहता ही रहता है। उसमें स्नान करते रहें और दूसरों को भी शामिल करें। जैसे अभी ऋषभ यहाँ रहता है, तो इर्द-गिर्द इसकी ख्याति कहने से नहीं होगी। ऋषभ के वर्तन से सबको लगेगा कि Shire में जाने जैसा है। जैसे मंदिर या अक्षरज्योति में कोई भी आता है, तो सबसे पहला गाक्य यही कहता है कि यहाँ शांति है। तो, वो *feeling* सबको आये कि Shire में जाते हैं, तो यहाँ *physically, mentally and spiritually comfort* है। ऐसा centre ये बन जाये, यही काकाजी से प्रार्थना और हमारी भावना...

छोटी-सी सभा के बाद सभी ने रात का प्रसाद लेकर अपने-अपने विश्राम स्थान के लिये प्रस्थान किया।

14 मई की सुबह 5:15 बजे सूर्योदय के लिये इकट्ठे होना था, लेकिन प्रातः तूफान और बारिश के कारण संभव ना हो पाया। नाश्ते के बाद प.पू. गुरुजी की पूजा में सब एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के सोफे के पास गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की मूर्ति का पोस्टर बना कर, हिन्दी भजन की निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं—

मेरा कर्मा तू, मेरा धर्मा तू, तेरा सब कुछ मैं, मेरा सब कुछ तू,
काकाजी तेरे, काकाजी का तू, परब्रह्म अखंड धारे, ब्रह्म है तू...

पाश्चात्य संस्कृति की Anna Jarvis द्वारा स्थापित एवं प्रचलित, मई महीने के दूसरे रविवार के अनुसार आज **Mother's Day** था और भारतीय संस्कृति में तो जननी को परमात्मा की उपमा दी गई है। जग प्रसिद्ध एक गाना भी है—

उसको नहीं देखा हमने कभी, पर इसकी ज़रूरत क्या होगी,
ऐ माँ तेरी सूरत से अलग, भगवान् की सूरत क्या होगी...

सो, पूजा के बाद दिल्ली सत्संग समाज की दिव्य माँ प.पू. दीदी को नमन करते हुए, बहनों-भाभियों ने प्रार्थनारूपी कार्ड अर्पण किया और पू. अंजलि भाभी द्वारा लाया गया केक का प्रसाद वितरित हुआ। दोपहर को प्रसाद लेकर, प.पू. गुरुजी विश्राम में गये। सायं प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सेवक पू. विश्वास, पू. ऋषभ गोयल और पू. ऋषभ नरला ने भजन गाकर सभा का माहौल बना दिया। सो, पू. प्रकाशचंद्रजी, पू. विजयपालजी, पू. ऋषभ नरला, पू. ऋषभ गोयल, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने अपनी भावनायें प्रकट की।





प.पू. गुरुजी ने आशिष वर्षा की—

मैंने कल या परसों भी बताया था कि सत्संग और कौटुम्बिक आत्मीयता से जुड़े हुए, पुनीतजी और अंजलि भाभी का जो सर्जन है, वो वैभव हो या ऋषभ—इसी तरह आत्मीयता से जुड़े रहेंगे... भीतर के अंदर एक बीज बैठ गया कि ये सत्संग अपना परिवार है और हम सत्संग के हैं। गुरुजी हम सबके मुखिया जैसे हैं। तो दिमाग़ में जो ये बात बैठ गई है, इससे बढ़ कर कोई आशीर्वाद हो नहीं सकता। जो काकाजी ने अपने आप set कर दिया। बस इसी रास्ते पर सत्संग को अपना परिवार मानें। मानो यहाँ (फागू) में कितना भी काम हो, लेकिन अगर दिल्ली मंदिर से (ऋषभ के पास) message आये कि एक दिन के लिये यहाँ आ जाओ, तो ये ना हो कि कैसे जायें? किसी तरह धुन करके-set करके आ जाये, जैसे ओ.पी. अग्रवाल इसकी मिसाल हैं। इन्हें जब भी दिल्ली बुलाया है; तो वे मुंबई से आ ही जाते हैं, कोई संदेह की बात नहीं रहती। बस, ऐसे हम बन जायें। इसी रास्ते पर हम हैं, और speed से बढ़ें और... काकाजी का सपना-योजना साकार हो जाये, ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने तीनों दिन मुश्किल से दो-तीन भिन्निट बात करी, लेकिन उसमें सभी को सत्संग का मर्म बता दिया। अगले दिन 15 मई की सुबह प.पू. गुरुजी एवं मुक्त दिल्ली के लिये प्रस्थान करने वाले थे, सो प्रसाद के बाद पू. ऋषभ ने Bonfire का arrangement किया था। पू. शशि यादवजी ने ढोलक बजा कर सभी में उमंग भर दी। फिर तो रात के बारह बजे तक नाचते-गाते, भांगड़ा-गरबा करके सबने खूब आनंद किया और... चार दिन प.पू. गुरुजी के साथ बिताये पलों को सदैव के लिये भीतर में कैद कर लिया।

15 मई की सुबह 5:35 पर सभी ने प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सूर्योदय देखा और ताली बजा कर धुन करी। तत्पश्चात् 8:00 बजे तक सभी ने अपना सामान pack करके रख दिया। प.पू. गुरुजी की पूजा में धुन और नाश्ता करने के बाद करीब 11:30 बजे सभी दिल्ली के लिये रवाना हुए। सायं 5:00 बजे रास्ते में हल्दीराम रेस्टरां में भोजन करके, रात को करीब 11:00 बजे सब दिल्ली मंदिर पहुँचे। सभी The Himalyan Shire में मंदिर-घर की feeling से रहे। पू. पुनीतजी, पू. अंजलि भाभी और पू. ऋषभ की भावना के लिये तो दिल नतमस्तक है ही और जिन स्वयंसेवकों ने सबके ठहरने, खाने-पीने और सभा इत्यादि की सुंदर व्यवस्था की, उसके लिये तो 'धन्यवाद' शब्द खूब छोटा है। बस, यही प्रार्थना होती है कि प.पू. गुरुजी जिस हेतु से सबको शिविर में अपने साथ आनंद कराने के लिये ले जाते हैं, उसे आत्मसात् करें और अपने मन-बुद्धि के सब तर्कों को अब तो छोड़ कर, प.पू. गुरुजी से प्राप्त होते ब्रह्मानंद की मर्ती में जीकर उनका परिश्रम सार्थक करें...

28-31 मार्च 2023



हरिद्वार में सद्गुरु संत शांति दादा का अस्थि विसर्जन...





Aarogyam Welfare Association में अस्थि विसर्जन निमित्त सभा...



विश्ववंदनीय योगगुरु बाबा रामदेवजी का अभिवादन...



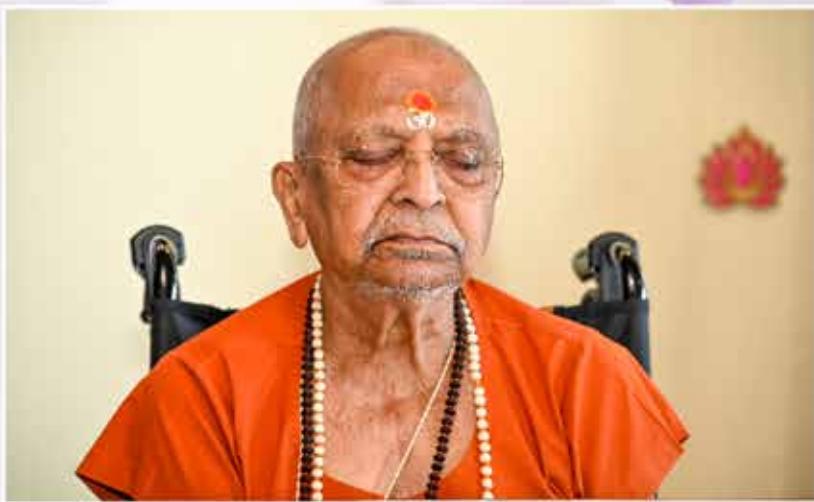
गंगा की धारा में प्रवाहित होतीं, सद्गुरु संत शंति दादा की अस्थियाँ...



30 मार्च – रामनवमी, भगवान् श्री स्वामिनारायण जयंती उत्सव...



य.पू. गुरुजी के संग हरिद्वार - ऋषिकेश की स्मृतियाँ...





परमत्व में विलीन होकर सर्वत्र व्यापक बने सद्गुरु संत शांति दादा!

27 जनवरी 2023 को सद्गुरु संत शांति दादा ने स्थूल विदाई ली। सभी को ज्ञात है कि विश्ववंदनीय योगगुरु बाबा रामदेवजी महाराज का संतभगवंत साहेबजी, सद्गुरु संत अश्विनभाई, सद्गुरु संत शांति दादा एवं समरत अनुपम मिशन के साथ अति घनिष्ठ संबंध हैं। सो, अपनत्व से भरे अनूठे संबंध से बाबा रामदेवजी ने आग्रहपूर्वक इच्छा प्रकट की कि सद्गुरु संत शांति दादा की अस्थियों का विसर्जन हरिद्वार की अमृत समान गंगा में किया जाये। उनकी इच्छापूर्ति करने और भगवान् स्वामिनारायण द्वारा तीर्थत्व को पाये प्रासादिक स्थल पर धुन-भजन करने हेतु संतभगवंत साहेबजी ने ‘हाँ’ करी। यह सारा कार्यक्रम तय हुआ, तो संतभगवंत साहेबजी ने इस विषय में प.पू. गुरुजी को संदेश भिजवाया कि वे भी संतों, युवकों, बहनों, हरिभक्तों को लेकर आयें। सद्गुरु संत शांति दादा के अक्षरधामगमन के समय slip disc होने के कारण प.पू. गुरुजी उनके अंतिम दर्शन के लिए नहीं जा सके थे। तब संतभगवंत साहेबजी ने स्वयं ही उन्हें आने के लिये मना किया था।

पर, अब प.पू. गुरुजी को अपने पुराने साथीदार सद्गुरु संत शांति दादा को श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अवसर प्राप्त हो रहा था। सो, संतभगवंत साहेबजी के आदेश अनुसार, तकरीबन 80 भक्तों के साथ हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना लिया। प.पू. गुरुजी की तबियत को ध्यान में रखते हुए पू. आशिष शाह ने प.पू. गुरुजी की यात्रा के लिये Vanity Van की व्यवस्था करी थी।

28 मार्च 2023 को करीब 10:30 बजे दो मिनट धुन करवा कर, प.पू. गुरुजी ने बस से जाने वाले मुक्तों को मंदिर से विदा किया और एक घंटे के बाद स्वयं भी संतों-मुक्तों के साथ हरिद्वार जाने निकले। दोपहर 2:30 बजे bikanerwala रेस्टरां में भोजन करके, सायं 6:30 बजे के करीब प.पू. गुरुजी एवं सभी Aarogyam Welfare Association में पहुँचे, जहाँ संतभगवंत साहेबजी एवं अनुपम मिशन से जुड़े हुए सभी मुक्त ठहरे हुए थे।

पुष्प वर्षा से अनुपम मिशन के भक्तों ने प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी का स्वागत किया। वहाँ के हॉल में बैठ कर, संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी की आपस की उमंगभरी ज्ञानवार्ता सुन कर, सबकी सफ़र की थकान ऐसी गायब हुई कि चाय-कॉफी पीने के लिए कोई भी वहाँ से उठा ही नहीं। काफ़ी देर तक प.पू. गुरुजी और संतभगवंत साहेबजी, सद्गुरु संत शांति दादा के प्रसंगों को याद करके बातें करते रहे। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद लिया।



प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि सत्पुरुष की 90 प्रतिशत उर्जा तो मुक्तों को व्यावाहरिक सूझ देने में इस्तेमाल होती है। इसका एहसास संतभगवंत साहेबजी ने भी सहज कराया। प्रसाद ग्रहण करने के बाद, संतभगवंत साहेबजी बहनों व भाभियों से मिलने आये। तब एक मुक्त को दरवाजे के पास खड़ा देखकर सहज ही उन्होंने सूचन किया—

हमें कभी भी ऐसी जगह पर खड़ा नहीं होना चाहिए, जहाँ से हमें किसी को हटाने की ज़ल्दत पड़े।

यह बात सुन कर दिल्ली के मुक्तों को एकदम प.पू. गुरुजी द्वारा किया गया सूचन याद आया और साथ ही गुणातीत खरूपों की एक जैसी गुणातीत शीति - शीति का दर्शन भी हुआ। जब भी कोई मुक्त सोफे का सहारा लेकर नीचे बैठता है, तो प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं—

सोफे से थोड़ा आगे होकर बैठो, ताकि यदि कोई सोफे पर बैठने आये, तो उसे तुम्हें हटने के लिये कहना ना पड़े।

ऐसा सूचन करने के बाद, सेवा के संदर्भ में भी अपना प्रसंग बताते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने बताया—

हम जब युवक थे, तो हमारी सेवा सभा के बाद wind up करने की होती थी। एक दिन सारी सेवा करने के बाद थोड़े बर्तन साफ़ करने बाकी रह गये थे। तो, बहनों ने कहा कि हम साफ़ कर देते हैं, आप सब बापा का दर्शन करने जाइये। हम जब योगीजी महाराज के पास पहुँचे, तो उन्होंने पूछा कि सारा काम पूर्ण हो गया। हमने कहा—जी, सारा काम हो गया, बस बर्तन धोने बाकी थे, उसके लिये बहनों ने कहा कि हम कर लेंगे। यह सुन कर **योगीजी महाराज** ने कहा—उन डोसियों को बाहर निकालो और तुम जाकर साफ़ करो। **तुम जो सेवा करोगे, वो ही मेरा दर्शन है।** ऐसा सुन कर हम सब तो उदास हो जाते हैं। पर, ऐसे सत्पुरुष सिर्फ़ कहने के लिए हमें ऐसा नहीं कहते, सचमुच उन्होंने खुद ऐसा जीवन जिया हुआ है।

रात को प.पू. गुरुजी Haridwar के Ambrosia Sarovar Portico में और अन्य भवतगण **The Fern Residency** में ठहरने गये।

अगले दिन 29 मार्च 2023 Aarogyam Welfare Association के उद्यान में सद्गुरु संत शांति दादा के अस्थि विसर्जन निमित्त महापूजा एवं भक्ति वंदना का आयोजन था। मंच की पृष्ठभूमि पर सद्गुरु संत शांति दादा की मूर्ति के साथ निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना लिखी थी—

ॐ असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

मृत्योर्मा अमृतं गमय । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अर्थात् मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।





सुबह 9:30 बजे महापूजा प्रारंभ हुई। मंच पर संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं हरिद्वार-स्वामिनारायण मंदिर के महंत शास्त्रीस्वामी श्री हरिवल्लभदासजी विराजमान थे। कुछ देर बाद बाबा रामदेवजी महाराज पधारे। महादीक्षा स्मृति दिन निमित्त पुष्प वर्षा से बाबा रामदेवजी का स्वागत किया और फिर उन्होंने संतभगवंत साहेबजी के साथ अपने व संत भाइयों के अनूठे संबंध का दर्शन कराते हुए कहा—

वैसे तो ये सब (अनुपम मिशन की नींव के अष्ट भाई) हम उम्र ही हैं, लेकिन इन्होंने साहेबजी को बड़ा मान लिया। गुरु-शिष्य परंपरा क्या? तो, संतभगवंत साहेबजी ने अपने साथीदारों को बड़ा माना और शांति दादा ने संतभगवंत साहेबजी को। **साधुता क्या होती है, यह मैंने संतभगवंत साहेबजी से सीखी।** इनकी वाणी और मुखारविंद पर बहुत तेज है और ऐसे हारय वाला मुख्य मैंने किसी का नहीं देखा। मैंने जब पहली बार इन्हें देखा, तो मुझे समझ आया कि सिर्फ भगवे कपड़े ले लेने से कोई साधु नहीं हो जाता। असली साधुता तो भीतर से होती है और इस ड्रेस में भी साधु हो सकते हैं।

महापूजा समाप्त होने के बाद अस्थि विसर्जन के लिए, सभी ने ‘चंडी घाट’ की ओर प्रस्थान किया। गंगा के जल में स्वयं खड़े रह कर, संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. शांति दादा की अस्थियाँ प्रवाहित कीं और आशीर्वाद रूप जल सब पर छिड़का। तबियत के कारण प.पू. गुरुजी गंगा की धारा में जाने के लिये असर्वर्थ थे, सो उन्होंने जल मँगवा कर एकदम पूँ नमन के ऊपर डाला। स्वाभाविक ही वह रोने लगा, तो उसे खुश करने के लिये प.पू. गुरुजी ने फिर जल मँगवा कर उससे अपने ऊपर डलवाया। पहली बात, प.पू. गुरुजी कभी भी किसी को दुःखी या रोता हुआ नहीं देख सकते। दूसरी मुख्य बात, गंगा के जल में जाने से पहले संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी से कहा था कि पानी ठंडा नहीं है। प.पू. गुरुजी और संतभगवंत साहेबजी को एक-दूजे का खूब माहात्म्य है, तो प.पू. गुरुजी को शायद ऐसा हुआ होगा कि संतभगवंत साहेबजी की इच्छा थी कि गुरुजी भी पानी में आते। तो, इस प्रकार अपने ऊपर पानी डलवा कर, हर पल एक साधक की अदा से जीते प.पू. गुरुजी ने यह भी एहसास कराया कि सत्पुरुष के वचन को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये।

Aarogyam Welfare Association में शाम 8:00 बजे सद्गुरु संत शांति दादा की स्मृति में भजन संध्या व सभा हुई। मुक्तों ने अपने स्वानुभव से सद्गुरु संत शांति दादा के प्रेम और अपनेपन का दर्शन कराया। तत्पश्चात् अपने सखा प.पू. शांतिभाई के प्रति भाव व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने लंधे खर में आशिष दी—

शांतिभाई साहेब के अद्वारामगमन का संदेश जब सेवकों ने मुझे दिया, तो मैं एकदम शून्यमनस्क



हो गया, क्योंकि कल्पना ही नहीं थी कि यह घटना इतनी त्वरित बन जायेगी। सहज ही उनके साथ की गई पुस्तक अनुपम भाग-2 की *proof reading* के प्रसंग स्मृति पठ पर उभर आये। शांतिभाई को जब भी देखा, तो वे एकदम शांत और नीरव रहते थे। प्रकाशन के कार्य में हम दोनों सहभागी होते थे। मैं कई बार *excite* भी हो जाता या मज़ाक भी कर लेता। पर, मेरे प्रति तनिक भी भावफेर किये बिना, वे स्थिरता से कहते—चलो, आगे बढ़ें! और... दोबारा कार्य में जोड़ देते...

सत्संग के कार्य केवल सत्संग के विकास के लिये नहीं होते, बल्कि हमारे अपने विकास के लिये हैं। आपके शब्दों में साहेब दादा, मैं तो साहेब ही कहता हूँ, अश्विनभाई, रतिभाई सभी हमारे लिये प्रार्थना करें कि बड़े पुरुषों की स्मृति के साथ, सहजभाव से सेवा रूप सत्संग के कार्य करते रहें...

संतभगवंत साहेबजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

गुरुजी सब संत, युवकों, संत बहनों और हरिभक्तों के साथ आये, सबको बहुत बल मिला। गुरुजी को सच्चा प्रेम है... शांतिभाई, अश्विनभाई और सब ब्रतधारी भाइयों के साथ गुरुजी बहुत सबसे हैं। गुरुजी को बैठने, उठने और चलने में अभी तकलीफ है, लेकिन जैसे ही शांतिभाई के अस्थि विसर्जन के बारे में सुना, तो उन्होंने तय कर लिया कि मुझे हरिद्वार आना है। यह उनके सच्चे प्रेम का दर्शन है... गुरुजी जब बेन में से उत्तर रहे थे, तब उन्हें देख कर आँख में आँसू आ गये। योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने जिनका पालन-पोषण किया है, उनके हृदय में अपार माहात्म्य का दर्शन होता है कि संतों के लिये क्या ना हो सके!

...प्रगट सत्पुरुष के द्वारा प्रभु दर्शन, आशीर्वाद देते हैं। उनके साथ जुड़ जायेंगे, उनकी आङ्गन में रहेंगे, उनका माहात्म्य समझेंगे और सब भक्तों का माहात्म्य समझ कर सेवा करेंगे, तो उसमें सारे साधन आ जाते हैं। हम सब आनंद कर रहे हैं, हम कोई सिद्ध पुरुष नहीं हो गये, गुणातीतभाव पाया नहीं हैं। पर, योगीजी महाराज ने हमें काकाजी-पप्पाजी की भेंट दी है और इन्होंने हरिप्रसादस्वामी, गुरुजी, अश्विनभाई, प्रेमस्वामी जैसे संतों की भेंट दी। इनके संबंध वालों का माहात्म्य हृदय में रख कर, सबका गुण गाना और सबकी सेवा करना। यह प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने की सरल से सरल रीति है। सब अपने हैं, किसी का कुछ देखना नहीं है... काम, क्रोधादि, ईर्ष्या के भाव से पर हो जायेंगे। भगवान, संत और भक्तों का जितना माहात्म्य बढ़ता जायेगा, भीतर में उतनी शांति बढ़ती जायेगी... ऐसे शांतिभाई थे!

योगीबापा ने काकाजी को 1964 में आङ्गन करी थी हमारा हाथ उनके हाथ में देकर कि विद्यानगर के युवकों का आप मार्गदर्शन करो... शांतिभाई को उनके घर वाले, उनकी शादी कराने के लिये





घर ले गये थे। तब अश्विनभाई, बापा की *personal* सेवा में थे। तो, बापा ने शांतिभाई को अटलादरा मंदिर के दर्शन करने बुलाया। वहाँ कमरे में बापा पत्र लिख रहे थे। **शांतिभाई** को देख कर वे खूब राजी हुए और फिर **अश्विनभाई** को बुला कर, **बापा** ने दोनों के कंधों पर हाथ रख कर कहा— पिछले जन्म में आप दोनों सगे भाई थे। इस जन्म में एक को सोखड़ा में और एक को गोरियाद में जन्म दिया। **दोनों भाई** बन कर रहना-कार्य करना, ऐसा कहते हुए आपस में दोनों के सिर मिलाये। तब तो हमने सोचा भी नहीं था कि साधु बनेंगे, साथ में रहेंगे। बस, साथ में पढ़ते थे...

30 मार्च 2023—रामनवमी, भगवान् स्वामिनारायण की जयंती का मंगलकारी दिन था। प.पू. गुरुजी भक्तों को लेकर ऋषिकेश गये। हमारे आत्मीय अक्षरनिवासी पू. **दिलीपभाई शाह** के छोटे सुपुत्र पू. **सौरभ शाह** ने **Neeraj Ganga Heritage Palace** में वहाँ के Incharge पू. **रोहितजी** द्वारा फलाहार की अच्छी व्यवस्था कराई थी। Staff ने संतों, युवकों, बहनों व भक्तों के मस्तक पर **ॐ** की छाप से चंदन का टीका लगा कर स्वागत किया। प्रसाद के बाद सभी हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी की आज्ञा से, **श्री नीलकंठ वर्णी** द्वारा प्रासादिक देवभूमि ऋषिकेश में कल-कल, छल-छल बहती गंगा के पुण्य प्रवाह का आचमन व स्नान किया। सायं 5:30 बजे के करीब सभी ने Aarogyam Welfare Association, हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया। यहाँ अल्पाहार के पश्चात् रामनवमी की सभा के लिए हॉल में एकत्रित हुए। सभा में धुन-भजन के बाद, अनुपम मिशन के संत भाईयों द्वारा record की गई **विश्ववंदनीय योगगुरु रामदेवजी** की **दीक्षा विधि** के समय की video clip चलाई। संतभगवंत साहेबजी भी दीक्षा विधि के साक्षी बनने आये थे और तब अपनी शुभकामनायें देते हुए, उन्होंने आचार्य बालकृष्णजी से कहा था—

आप कभी भी रामदेवजी का साथ नहीं छोड़ना।

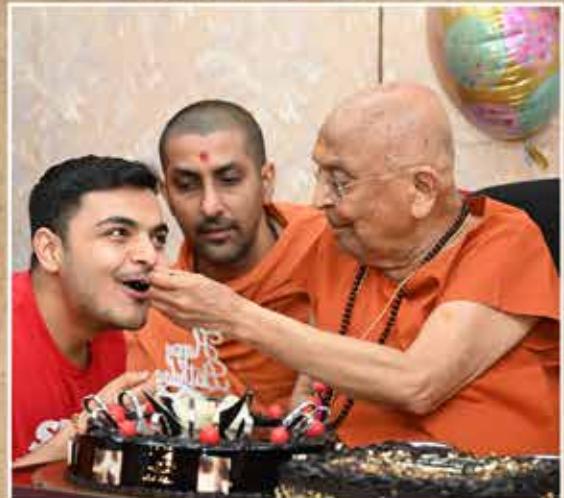
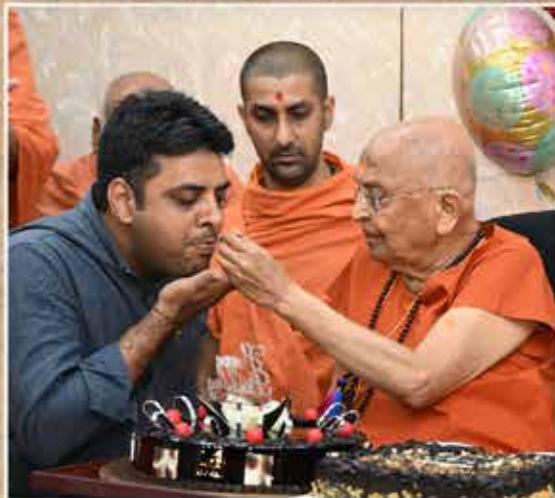
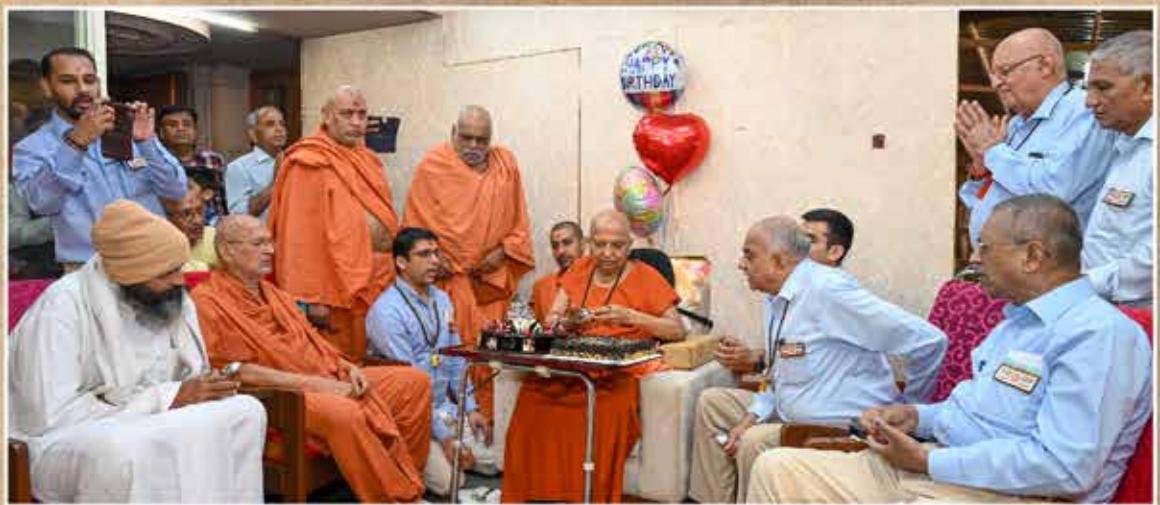
और... **विश्ववंदनीय योगगुरु रामदेवजी** को आशिष दी थी—

आने वाले समय में आपका प्रकाश दूर-दूर फैलेगा...

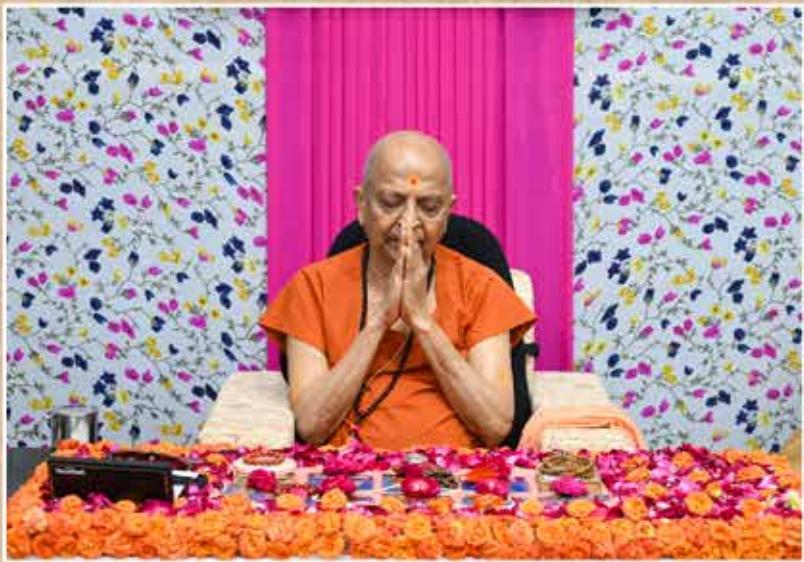
आज गुरुहरि योगीजी महाराज के अखंड धारक संतभगवंत साहेबजी के संकल्प से, इनके द्वारा विश्वभर में जनकल्प्याण हो रहा है। अंत में मुक्तों ने भजनों पर आनंदोब्रह्म करके, **श्रीहरि** जयंती निमित्त आरती के बाद फलाहार एवं पू. **सुहृदस्वामीजी** द्वारा बनाई गई पंजीरी का प्रसाद लिया। सभी अपने विश्राम स्थान पर गये।

31 मार्च की सुबह 9:30 बजे, ‘हरि के द्वार’ में गुणातीत स्वरूपों की निशा में प्राप्त हुई दिव्य स्मृतियों को संजो कर प्रस्थान करने का समय आ गया। नाश्ते के बाद **संतभगवंत साहेबजी** का दर्शन करके देर सायं को सभी दिल्ली मंदिर लौटे। ये चार दिन यूं तो पलक झापकते ही बीत गये, लेकिन मुक्तों के अंतर को प्रगट प्रभु की निराली मूर्तियों से भर गये!

12 मार्च – य.पू. गुरुजी के 86वें प्राकट्य दिन की पूर्व संध्या...

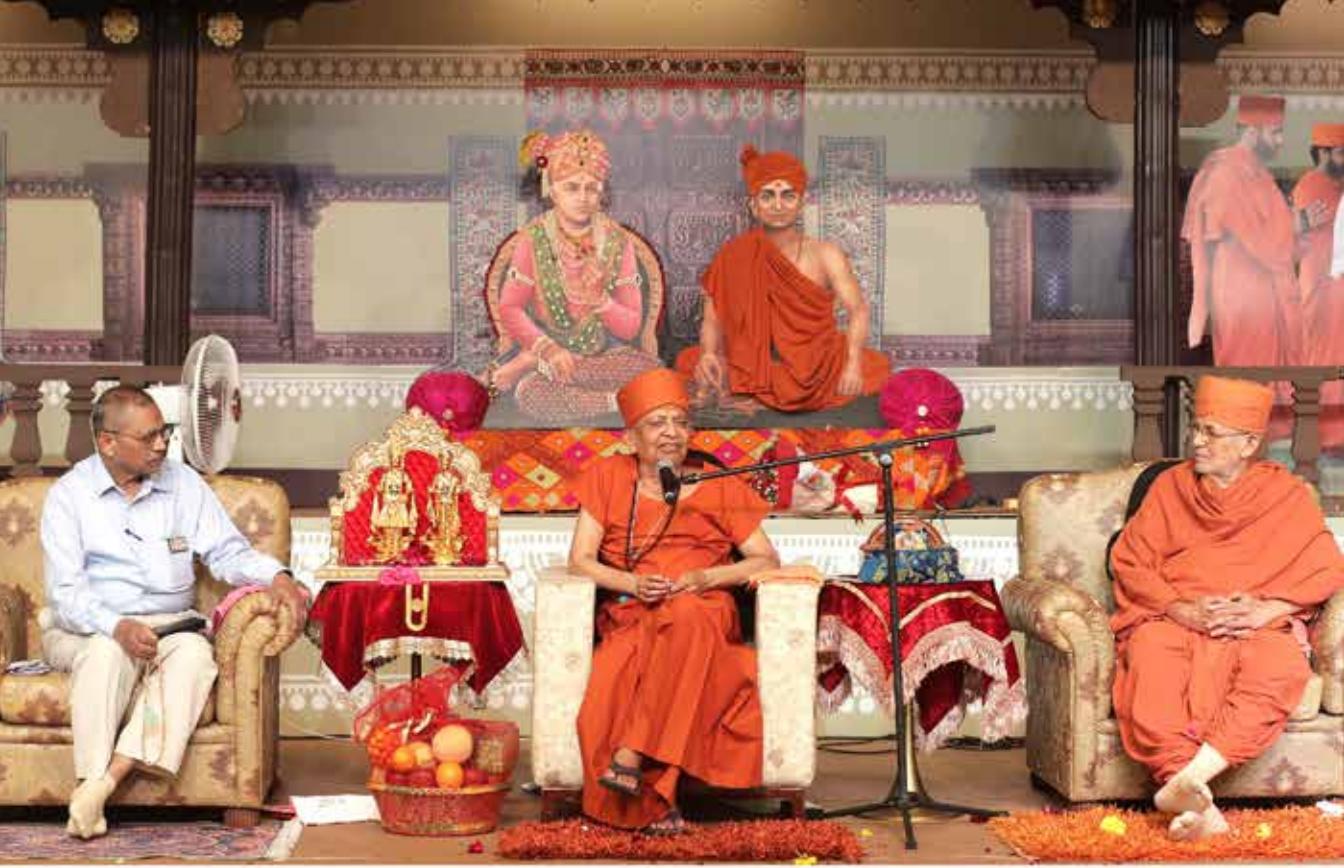


13 मार्च—य.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन की सुबह



सेवक की दीक्षा प्राप्त करते जगरांव के पू. दलजीत सिंहजी एवं पू. कमल किशोरजी (लबली)...





13 मार्च, सायं
प.यू. गुरुजी का 86वां ग्राक्ट्रयोत्सव...



प.पू. गुरुजी को हार द्वारा भावार्पण...



उत्सव की स्मृतियाँ...



अयनन्तवभरी चिकित्सा सेवाओं के लिए आत्मीय डॉक्टर्स का सम्मान...



चिकित्सा सेवा से भक्ति अदा करने वाले डॉक्टर्स का अभिवादन...



उत्सव के समापन पर आनंद की अभिव्यक्ति...



प.पू. गुरुजी के

86वें प्राकट्योत्सव की मंगल बेला...

23-25 दिसंबर 2022 प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्राकट्य पर्व प्रत्यक्ष स्वरूपों की निशा में समग्र गुणातीत समाज के मुक्तों ने भावपूर्ण मनाया था। इसलिये 13 मार्च 2023 को प.पू. गुरुजी का 86वाँ प्राकट्य पर्व स्थानिक रूप से मनाने का तय हुआ। परंतु, प.पू. गुरुजी के अप्रतिम वात्सल्य वश सभी खींचे चले आते हैं। सो, गुरुहरि काकाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने व प.पू. गुरुजी से रनेहबंधन से जुड़े, पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई मुक्तों के साथ एवं ‘साधु पर्व’ पर हरिधाम से प.पू. दासस्वामीजी नहीं आ पाये थे, वे भी संतों के साथ पथारे। पवई के पू. राजुभाई ठक्कर तो फरवरी महीने में ही दिल्ली आ गये थे। संभाजी नगर में मनाये गये ‘मैत्री सुमिरन पर्व’ में पैठण की गादी के महंत श्री एकनाथ महाराजजी के वारिस सद्गुरु 108 प.पू. प्रकाशदासजी पवई के भाइयों के संपर्क में आये थे, वे भी इस मंगलकारी दिन में शामिल होने आये। इसके अतिरिक्त, यू.पी., हरियाणा, पंजाब, गुजरात, मुंबई के हरिभक्त 12 मार्च 2023 दोपहर तक आ गये। इसी दिन शाम को ‘कल्पवृक्ष’ हॉल में प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या पर सभा का शुभारंभ धुन से हुआ। 20 मिनट की धुन के बाद, पू. राकेशभाई शाह एवं सेवक विश्वास ने प्रगट स्वरूप को तत्व से पहचानने की प्रार्थना करते हुए ‘तत्व से तुम्हें जान पायें, जिंदगी संवर संवर जाये...’ भजन प्रस्तुत किया।

सर्वप्रथम कविता के रूप में अपने अनुभवों, भावनाओं और विचारों को सुंदरता से प्रकट करने वाले पू. रमेश त्रिवेदीजी ने प.पू. गुरुजी की महिमा का गुणगान किया। पश्चात् दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े पंजाब-जगरांव के पू. अनूपजी ने ‘एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली...’ भजन प्रस्तुत किया। पवई के पू. राजुभाई ठक्कर ने प.पू. गुरुजी के साथ के प्रसंगों का स्मरण करते हुए मार्गदर्शन दिया। पू. ऋषभ नरला ने पू. राकेशभाई एवं पू. सेवक विश्वास के साथ ‘गुरुजी के रूप में प्रभु हमने पाये, जन्मों जन्म के बंधन जिसने छुड़ाये...’ भजन गाने के बाद, प.पू. गुरुजी से प्राप्त हुए अपने अनुभवों से सबको अवगत कराया। हरिधाम के पू. हरिप्रकाशस्वामीजी ने गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में सभी की ओर से मंगल प्रार्थना की और... अंत में प.पू. राजुभाई ठक्कर ने दिल्ली मंदिर से खूब घनिष्ठता से जुड़े अमदावाद के पू. दिलीपभाई ठक्कर को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में आशीर्वाद रूपी हार पहना कर सभा का समापन किया।



13 मार्च—प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन की मंगल प्रभात पर सभी महापूजा एवं प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा के लिये एकत्र हुए। इस अनमोल अवसर पर अक्षरज्योति में भगवान भजती जगरांव की पू. गंगा दीदी के पूर्वाश्रम के पिताजी पू. दलजीत सिंहजी एवं जगरांव के ही पू. कमल कतियालजी उर्फ लवली भड़या, जो कि प.पू. गुरुजी को राजी करने खूब आत्मीयता से मंदिर व अक्षरज्योति की सेवाओं में रत रहते हैं, इन दोनों ने सेवक की दीक्षा ली। कुछ मुक्तों ने अपनी वस्तुएँ प्रसादी की करने प.पू. गुरुजी की पूजा में रखी थीं, तो उन सभी को प.पू. गुरुजी ने अपने हाथ से वे (ही उन्हें) दीं।

जगरांव के पू. अनूप टांगरीजी एवं पू. उज्जवल द्वारा भजन प्रस्तुति के बाद, जगरांव के पू. अशोक शर्माजी एवं पू. नरेंद्र शर्माजी ने अपने अनुभवों का लाभ देते हुए प.पू. गुरुजी के निरामय रहने की प्रार्थना करी। तत्पश्चात् दिल्ली मंदिर के आत्मीय पू. अमृत पटेलजी की छुपी सेवा को appreciate करते हुए प.पू. दीदी ने उन्हें साधु पर्व की स्मृति भेंट दी। करीब छः-सात साल से मुंबई के पू. विनोदभाई शाह अपनी पत्नी पू. जयश्री बहन के साथ दिल्ली में स्थाई रूप से निवास कर रहे हैं। शिकागो की पू. नयना बहन गंगर के संबंध से वे दिल्ली मंदिर के संपर्क में आये और अपनेपन से जुड़ गये। पू. जयश्री बहन, प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त खुद pineapple cake बना कर लाई थीं, सो प.पू. गुरुजी ने उनकी भावना ग्रहण की। सबको प.पू. गुरुजी की पूजा की प्रसादी का पुष्प और चॉकलेट का प्रसाद वितरित किया गया।

सायं—प.पू. गुरुजी के प्राकट्य उत्सव का आयोजन मंदिर के पीछे के परिसर में था। खरुपों के स्वागत हेतु पुष्पों से गलीचा बनाया था। फूलों से सुसज्जित बैटरी कार में विराजमान खरुपों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। मंच की पृष्ठभूमि पर निमंत्रण कार्ड के अनुसार ही भक्तराज सूरा खाचर के दरबार का दृश्य बनाया था। दरबार के मध्य में आसन पर भगवान खामिनारायण और गुणातीतानंदस्वामीजी की मूर्ति विराजमान थी। दरबार की दायीं और दृश्य दिखाया था कि एक घोड़ी के पास श्रीजी महाराज लकड़ी लेकर बैठे हुए हैं और वहीं साथ में सुराखाचर, दो संत और मूलजी ब्रह्मचारी अनोखी लीला का दर्शन कर रहे हैं। दरबार के सबसे ऊपर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत खरुपों की मूर्ति का दर्शन हो रहा था और मुक्तों की जानकारी हेतु मध्य में लिखा था— **भक्तराज सूरा खाचर का दरबार...**

भगवान खामिनारायण के लीला चरित्र को दर्शाते इस अद्भुत दृश्य का मर्म समझाते हुए पू. राकेशभाई शाह ने मुक्तों की ओर से गुणातीत खरुपों से प्रार्थना की—
भगवान खामिनारायण एक विशिष्ट उद्देश्य से धरती पर प्रगट हुए।





वो था—जीव से चिपके स्वभावों पर प्रहार करके, उन्हें जड़ से निर्मूल करना।
एक बार सूराभक्त के दरबार में श्रीजी महाराज गोष्ठी कर रहे थे।
वहीं आँगन में खूंटे से बंधी एक घोड़ी पर उनकी दृष्टि पड़ी।
वह घोड़ी आस-पास से गुज़रने वालों को लगातार लात मार रही थी।
महाराज ने सूराभक्त से पूछा— यह घोड़ी ऐसा क्यों कर रही है?
सूराभक्त ने बताया— महाराज, ये लड़ाकी है। जो भी इसके पास से गुज़रता है, उसे लात मारती है।
महाराज बोले— **ऐसा स्वभाव तो छुड़वाना पड़ेगा।**
तुरंत हाथ में लकड़ी लेकर महाराज घोड़ी के पास जा बैठे।
महाराज घोड़ी के पैर पर लकड़ी लगाते और घोड़ी लकड़ी को लात मारती।
देर तक महाराज ऐसा ही करते रहे
और... घोड़ी का पैर सूज गया; वह लात मारने असमर्थ हो गई।
तब महाराज बोले— **जीव जब थकता है, तभी स्वभाव छोड़ता है।**
श्रीजी महाराज ने घोड़ी का स्वभाव छुड़वाने के लिये इतना परिश्रम किया था।
वैसे ही हमारे स्वभाव छुड़वाने के लिये हे गुरुजी! आप दिन-रात निरंतर परिश्रम कर रहे हैं;
लेकिन, हमारी जीवदशा देख कर आप अकसर नरम दिल हो जाते हैं।
पर, अब हम पर रहम न करके, स्वभाव से मुक्त करने के लिये
कथा-वार्ता, गोष्ठी, स्पष्ट सूचन या डॉट रूपी छड़ी से प्रहार करके भी
हमारा रूपांतर करके, हमें सदा-सर्वथा सुखी व समृद्ध कर ही दीजिये...

गुरुहरि काकाजी अकसर कहते थे— प्रभु के नाम का नमक डाल कर हरेक क्रिया करें और
गुरुहरि पप्पाजी कहते— पहले प्रभु, फिर कदम बढ़ाना। सो, प्रागट्योत्सव का आरंभ पू. हृदय
वर्मा एवं पू. अनूप टांगरीजी ने ‘स्वामिनारायण धुन’ से किया। तदोपरांत पू. अनूपजी ने ‘मेरे
सतगुरु प्यारे का जन्मदिन आया है...' भजन प्रस्तुत किया।

सच्चे साधु का एक ही उद्यम होता है कि धर्म, वर्ण, रंग या भाषा का भेद न रख कर, संबंध
में आये मुक्तों को केवल प्रभु से जोड़ना। करीब सात साल पहले प.पू. गुरुजी अपने प्यारे नक्षत्र
शाह के स्कूल के दाखिले के लिये खयं दिल्ली के ‘दर्शन अकादमी’ में गये थे। श्री ए. डेविड
सर बहुत ही सुलझे हुए वहाँ के principal थे। उन्हें प.पू. गुरुजी की सादगी व अपनापन इतना
स्पर्श कर गया कि मंदिर के साथ उनका एक अच्छा संबंध स्थापित हो गया है। और... अब तो



वे मानो दिल्ली गुणातीत कुनबे के सदस्य ही बन जये हैं। उन्होंने अंग्रेजी में प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए अपना भाव प्रकट किया, जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न प्रस्तुत है—

...मुझे लगता है कि मैं एक बाहर का व्यक्ति हूँ, पर मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ। जब मैं पहली बार यहाँ आया था, तो गुरुजी अपने सोफे पर बैठे हुए थे और मुझे उनसे पहली नज़र में प्यार हो गया। तब से एक आकर्षण मुझे उनकी ओर खींचता है। मैं 13 मार्च कभी भूलता नहीं, बल्कि इसके इंतजार में रहता हूँ। जब ये महीना शुरू हुआ, मैंने ठान लिया कि इस तारीख को नहीं भूलना। ये एक मौका है उनके साथ कुछ क्षण बिताने का और उनसे आशीर्वाद लेने का...

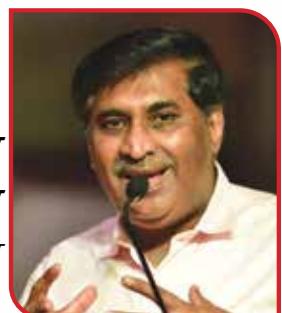


हम सब इतने तुच्छ मनुष्य हैं, जो आपके ही आशीर्वाद के आधार पर हैं। रविन्द्रनाथ टेंगोर ने बहुत खूबसूरत पंक्तियाँ कही थीं— जब भी किसी शिशु का जन्म होता है, तो वो प्रमाण है कि परमात्मा जगत से प्रेम करते हैं। गुरुजी एक बालक की भाँति दिखते हैं। ग्रंथों में कहा है कि स्वर्ग में जाने के लिये एक बालक बनना पड़ता है। गुरुजी की बालक जैसी निर्दोषता ही लोगों को उनकी ओर खींचती है...

गुरुजी सिर्फ शिक्षा नहीं देते, बल्कि खुद के वर्तन से सबको सिखाते हैं। उनके साथ दिल से दिल की बातें होती हैं। यहाँ आकर बैठता हूँ, मैं और गुरुजी एक-दूजे को निहारते रहते हैं। ज्यादा बातें नहीं करते, फिर भी काफी समझ में आता है कि लोग यहाँ क्यों इतना खींचे चले आते हैं? क्योंकि वे जानते हैं कि गुरुजी बातें करने से पहले खुद अपने वर्तन में लाते हैं... मैं प्रार्थना करता रहूँगा कि भगवान आपको खूब आशीर्वाद दें ताकि आप ऐसे ही हमारा सर्जन करके मार्गदर्शन देते रहें। भगवान आपको दीर्घायु दें, ताकि आप सबको रास्ता दिखा सकें। क्योंकि आप भगवान और भक्तों के बीच की कड़ी हैं। मेरे ख्याल से आप वो राहबर हैं, जो आखिर तक हमारे साथ रहकर हमें प्रभु तक ले जायेंगे...

तत्पश्चात् NDPL के अधिकारी पू. सुदेशजी ने बहुत कम शब्दों में, लेकिन मार्मिक भावना व्यक्त करी—

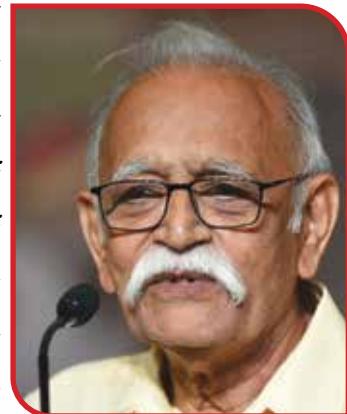
...गुरुजी के समक्ष जब भी बैठते हैं, तो अजीब-सा चुंबकीय आकर्षण होता है। वो क्या होता है, उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता, लेकिन कुछ तो होता है। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि गुरुजी का र्वास्थ्य अच्छा रहे और हमें उनका आशीर्वाद ऐसे ही मिलता रहे।





और फिर... मूक सेवा करने वाले दिल्ली मंदिर के आत्मीय पू. अमृतभाई पटेल साहेब ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए कहा—

...1978 से मैं गुरुजी से जुड़ा हूँ। बिना बोले काम करना मेरा स्वभाव है... अभी गुरुजी ने आशिषभाई और मिलनभाई को कुछ काम सौंपा था, तो उनके साथ मुझे भी गढ़ा जाने का मौका मिला था। वहाँ *Baps* के मंदिर में बहुत अच्छी तरह से मूर्तियों के साथ महाराज की पूरी स्टोरी की प्रदर्शनी लगी हुई थी। उसमें मुझे एक प्रसंग बहुत अच्छा लगा था कि सहजानंदस्वामी ने अपने आखिरी समय में जब बीमारी ग्रहण कर ली थी, तो उस समय उन्होंने अपने आपको एक कमरे में बंद कर लिया था और सबको ये आझ्ञा की थी कि मुझे कोई मिले नहीं। लेकिन, उस रियति में भी सहजानंदस्वामी अंदर बैठे एक ही व्यक्ति का इंतजार करते रहते थे और वे थे गुणातीतानंदस्वामी! गुणातीतानंदस्वामी ने जब उस कमरे में प्रवेश किया, तो महाराज के चेहरे पर बीमारी के कोई भाव नहीं थे, बल्कि बहुत ज्यादा प्रसन्न हो गये। **गुणातीतानंदस्वामी ने सहजानंदस्वामी के दिल में कैसी जगह बना ली थी!** उस प्रसंग का दर्शन यहाँ भी होता है कि काकाजी के दिल में गुरुजी ने भी ऐसी जगह बना कर रखी थी। गुरुजी अपनी कई बातों में जो उल्लेख करते हैं, उससे काकाजी और उनका क्या *relation* था, उसका स्वाल पड़ता है। इसलिये मुझे महाराज का वो प्रसंग और काकाजी के प्रसंग दोनों समान लगते हैं। गुरुजी का काकाजी के साथ ऐसा लगाव है कि गुरुजी हमेशा कहते हैं कि मैं काकाजी को राजी कर पाऊँ, ऐसा लगाव मैं करना चाहता हूँ। तो आज गुरुजी के 86वें जन्मदिन पर हम सब प्रण करें कि हम सब हमारा ऐसा स्वभाव बनायें कि कब हम गुरुजी को राजी कर लें?



...गुरुजी के स्वभाव के बारे में बताऊँ, तो मुझे जो अनुभव हुआ है उससे लगता है कि चाहे कोई छोटा हो, बड़ा हो, बच्चा हो या मंदिर का कोई *paid servant* ही हो, इन सभी के साथ गुरुजी का एक-सा रवैया है। एक प्रसंग कहूँगा—अमदावाद में मेरी माताजी तीन महीने कोमा में रहीं। उनके सारे *organs* ठीक काम करते थे, लेकिन उनका *response* कुछ नहीं मिलता था। वहाँ के सारे *physician* एवं *neurology* के डॉक्टर्स से मिलकर मैंने ये तय किया कि मैं उन्हें दिल्ली ले जाऊँ। डॉक्टरों ने कहा कि आप ले जा सकते हैं, द्रवेल कर सकते हैं। जब मुझे यह जवाब मिला, तो मैंने सबसे पहले गुरुजी को फोन पर सारी बात की। तब गुरुजी बोले कि आप कोई

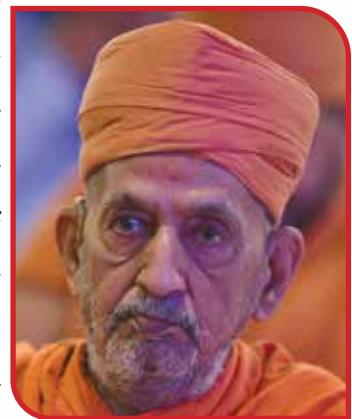


फ़िकर मत कीजिये। माताजी के साथ में दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उतरा, पर उसके बाद मुझे नहीं पता कि वे मेरे घर के सेकेण्ड प्लॉर पर कब और कैसे पहुँची? सारी व्यवस्था गुरुजी ने सब सत्संगियों के द्वारा इतनी अच्छी तरह से करी थी। भक्त लोग स्ट्रेचर, एम्बुलेंस लेकर तैयार थे।

ऐसी छोटी-बड़ी चीजें हरेक ने अनुभव करी होंगी। पर, ये मेरे लिये बहुत बड़ी बात है। गुरुजी ने यहाँ हरेक व्यक्ति को इतना अपनापन दिया है कि हरेक को ज़रूर लगता होगा कि गुरुजी मेरे हैं। गुरुजी बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हैं। जो व्यक्ति जिस स्टेटस का होता है, गुरुजी उससे वैसे बात करते हैं। हर विषय की इतनी सूक्ष्म बातें भी इनको मालूम हैं, हर सज्जेकर्त पर बात कर सकते हैं। गुरुजी का ये स्वभाव मेरे दिल को *touch* करता है। मैं 1978 से गुरुजी के साथ जो जुड़ा हूँ, तब से अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ कि गुरुजी ने मुझ पर इतना विश्वास रख कर काम और सेवा का मौका भी दिया है...

गुरुहरि योगीजी महाराज ने 51 पढ़े-लिखे युवकों को साधु की दीक्षा दी, तब प.पू. गुरुजी के साथ सांकरदा के पू. स्नेहलस्वामीजी ने भी दीक्षा ली थी। फिर संरथा से विमुख होने के बाद प.पू. गुरुजी सोखड़ा व सांकरदा रहे, तब भी प.पू. स्नेहलस्वामीजी उनके साथ रहे और दोनों केवल सखाभाव से नहीं, बल्कि प्रगट प्रभु के संबंध के माहात्म्य से जुड़ गये। प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन के अवसर पर पू. स्नेहलस्वामीजी सहज ही प्रार्थना करने आतुर रहते हैं, वे भले नहीं आ पाये, लेकिन फोन पर प.पू. गुरुजी को आशीष याचना की और निम्न माहात्म्यगान की ऑडियो भेजी, जिसका सबने श्रवण किया—

...साकार् काकाजी स्वरूप परम पूज्य गुरुजी के 86वें प्रागट्य पर्व की जय जय जय। प.पू. गुरुजी आपके चरणों में अंतर की गदगद प्रार्थना है कि 1961 में जब घेला नदी में स्नान करने जाते हुए किनारे पर आप मुझसे मिले तब आपने कहा था $8 \times 6 = 48$ साधु हुए हैं, उनतालीसवां बाकी हैं। उनतालीसवें में स्नेहलस्वामी—भास्कर भगत का नंबर आपने लगवा दिया और जीवन धन्य कर दिया। बापा, काका, पप्पा का दिया कॉल याद करता हूँ। काकाजी ने 15 फरवरी 1986 को कहा था कि हर एक को मुझे भगतजी जैसा बनाना है। फिर मेरी ओर देख कर कहा—तुझे भी बनाना है। काकाजी ने कहा था कि स्वयं को प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप मानना। हमेशा





ये विचार करता हूँ कि मैं योगीजी महाराज-काकाजी का प्रकाश हूँ, मैं प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप हूँ। ऐसा मानने का प्रयत्न कर रहा हूँ। हे गुरुजी! आपके चरणों में अंतर से प्रार्थना है कि मुझे और कोई आशीर्वद नहीं चाहिए, पर यह प्रार्थना मेरे जीवन में साकार हो। काकाजी-पप्पाजी ने वचन दिया है कि आप साधु हो जाओ, आपको इन्द्रियों-अंतःकरण के गढ़ जीतने नहीं पड़ेंगे। वो गढ़ तो जीत चुके, पर अब वो आशीर्वद साकार हों कि 24 घंटे (संत की) प्रत्यक्षता का भाव रहे। आप जैसे काकाजी में अखंड निमग्न रहते हो-विचरते हो, ऐसा मेरा जीवन बने और बापा का जो ऋण है वो सदा अदा करें। जिसके लिये उन्होंने हर एक को साधु बनाया, ऐसा मैं हो जाऊं यही प्रार्थना आपके चरणों में धरता हूँ। आपने दो बार मेरे सिर पर हाथ रखा है, उसे मैं ऐसा मानता हूँ कि पप्पाजी, काकाजी और अक्षरविहारीस्वामीजी ने ही मेरे सिर पर हाथ रखा है। हमारे लिये जो कुछ भी हो, वो आप ही हो...

तत्पश्चात् उत्सव का लाभ लेने आई राष्ट्रीय महिला मोर्चा, भाजपा की उपाध्यक्ष व निगम पार्षद श्रीमती रेखा गुप्ताजी का स्वागत पूर्ण अनिता दुर्जाजी ने हार पहना कर किया। पवर्ड मंदिर के युवकों के प्रेरणा स्रोत एवं प्रभु की Energy से भरपूर प.पूर्ण वशीभाई ने आशिष वर्षा की—



...एक दिव्य अद्वितीय के वातावरण में हम बैठे हैं। कल शाम को flight से आये और गुरुजी के पास बैठे। तब से अद्वितीय की समाधि जारी हुई और अब तक जारी है... पटेल साहेब ने बताया कि गुरुजी के साथ थकान नहीं लगती। जैसे हम कल जल्दी उठे थे, flight से आने के बाद रात को डेढ़ बजे सोये, लेकिन सुबह फ्रेश थे। तो पटेल साहेब की बात सही है। सुदेशजी ने कहा कि गुरुजी को देख कर कुछ-कुछ होता है। गुरुजी, दासस्वामी और सब गुणातीत पुरुषों की पावर ऐसी है कि इनके साथ बैठे, तो फ्रेशनेस ऑटोमेटिक छलकती रहती है... दीपक चोपड़ा की बुक

में एक topic था—Ageless Body and Timeless Mind. गुरुजी को देख कर वो बात याद आती है। इसी platform पर इनका जब 60वाँ, 75वाँ जन्मदिन मनाया था, तो हम कहते थे कि ये रिकॉर्ड 17 हैं और 86 की आयु में भी वे ऐसे ही लगते हैं...

ये जो स्टेज पर सूरा खाचर का दरबार बनाया है, वह देख कर ऐसा लगता है कि भगवान प्रगट हैं, तभी तो David Sahab को Godliness feel हुई। भगवान स्वामिनारायण ने अपने



गुणातीत संतों द्वारा पृथकी पर प्रगट रहने की बात करी। वो भाव और आशीर्वाद यहाँ *feel* भी होता है। काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, तीन फरवरी पार्क, स्वामिनारायण अन्डरपास, संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों का सर्जन गुरुजी ने किया। कभी-कभी हम युग परिवर्तन की बात करते हैं और हम भले उसके साथी बनते हैं, पर हमें पता नहीं चलता है कि ये युग परिवर्तन का कार्य हो रहा है...

12 फरवरी को जब हम गुरुजी का दर्शन करने आये, तो उन्होंने कमर का दर्द ग्रहण किया था... जिसे होता है, उसे पता चलता है। मुझे हुआ है, *really problematic* बीमारी है। डॉक्टर ने गुरुजी से कहा कि 90 दिन आराम करना है।

काकाजी कहते थे— 6 महीना भजन करो, तब भगवान् वश होते हैं। लेकिन आज तो 6 घंटे में और उससे आगे 6 मिनिट में वश होते हैं।

तो, गुरुजी से प्रार्थना करी थी कि हम 90 मिनिट धुन करेंगे, लेकिन आप अच्छे हो जाओ। तो देखो चमत्कार हुआ... हम सबको लगता था कि अभी दिसंबर में गुरुजी का 'साधु पर्व' मनाया था, तो 13 मार्च का *programme low profile* होगा, घर-घर की ही सभा करेंगे। लेकिन *timeless mind and ageless body* का चमत्कार देखा कि वे अच्छे हो ही गये, वे अच्छे ही हैं... सुबह से उठते हैं, तब से उनका कार्य शुरू हो जाता है कि भगत कैसे सुखी हों, कौन-से भगत के लिये कुछ काम करें। होली वाले दिन देखा कि बीमारी में भी प्रभु की *consciousness* में वे सब पर पानी छांट रहे थे। हमें खूब अचंभा भी लगा, क्योंकि गुरुजी पूरा भीग गये थे। ऐसा हो रहा था कि कपड़े गीले होने के कारण कहीं गुरुजी को सर्दी-जुकाम ना हो जाये? तो ये *history miracle* कहा जाये। इसी प्रकार, महंतस्वामी मुंबई थे तो आदर्शजीवनस्वामी ने उनसे प्रार्थना करी कि इस बार *programme low profile* करेंगे, क्योंकि अभी अमदावाद में 30 दिन 'प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव' हुआ। लेकिन, बाद में महंतस्वामी ने कहा— नहीं, हमें 'फूलदोल उत्सव' करना ही है। महंतस्वामी भी 88 साल के हैं। इसी प्रकार यहाँ गुरुजी ने पक्का किया कि करना ही है। ये स्वरूपों की एकता—अभी जो *divine power* काम कर रही है, वो युग परिवर्तन की बात हो रही है। 27 जनवरी को शांति दादा का अक्षरधामगमन हुआ और साहेब दादा का बथडे 7 मार्च व 8 मार्च धुलेण्डी तिथि के हिसाब से भिक्ष से भिक्ष होता था। पहले लगा कि छोटा सेलीब्रेशन होगा। लेकिन, उन्होंने बहुत भवित्वभाव से शांति दादा की ब्रयोदशी—अक्षरपुरुषोत्तम कथामंगल की पारायण की और जो संत भाइयों के साथ साहेब दादा





ने रास खेला और अगले दिन धुलेन्डी पर बर्थडे का सेलीब्रेशन जैसे पहले पौषी पूनम की शिविर होती थी, ऐसी अद्भुत कथावार्ता से हुआ...

भगवान ये सब जो कार्य कर रहे हैं, उसके लिये काकाजी कहते थे कि आप आँख बंद करके नहीं, खुली आँख से ध्यान करो... गुरुजी ने कैसे भवत्त तैयार किये हैं? गुरुजी की *qualities* सबमें *imbibe* हैं, जैसे समर्पण, *tender care*...

गुरुजी की एक और *quality* है भजन! वे भजनीक हैं। भवतों में भी भजन की *priority imbibe* कर दी है। ये लड़की घोड़ी का प्रसंग दिखाने का मतलब क्या है? देखो, उपदेश देना आसान है, लेकिन स्वभाव का रूपांतर करना कोई आसान बात नहीं। पर, महाराज ने वही किया... स्वामिनारायण-हमारे गुणातीत समाज की सबसे सुदंर और महत्वपूर्ण परंपरा है कि जहाँ रूपांतर का *process* है, सिर्फ बातें नहीं हैं। रूपांतर करके, गुणातीतभाव में लेकर जाने का जो *process* गुरुजी ने उत्तर भारत-दिल्ली में किया, वह आसान बात नहीं है...

सोखड़ा से भी संत आते हैं, तो उनको उनके अनुरूप इतना आनंद कराते हैं। दासस्वामी का प्रसंग तो *live* देखा है। उन्हें पैर में *fracture* हुआ, तो दासस्वामी को हरिद्वार से *tender care* करके दिल्ली लाये और अपने डॉ. कमल दुरेजा ने *operation* किया। तो, दासस्वामी के दिल में एक ठंडक हो गई है। जहाँ ऐसे बड़े पुरुष होते हैं, वहाँ उनके सिद्धांतों पर चलने से इतिहास लिखा जाता है। दिल्ली में हमने देखा है कि 35-40 साल में एक-एक ऐसी ऐतिहासिक घटना घटी है। हरेक उत्सव में हम आते हैं, तो नया-नया कुछ देखते हैं। अभी प्रणव (*पिंटू*) को अचानक *liver* की दिक्कत हो गई। लेकिन तनिक भी घबराये बिना, साथु पर्व में गङ्गबड़ हुए बिना आसानी से पार हो गया। यहाँ जो महाराज का प्रसंग दिखाया है, वो कितनी जीवंत बात है। हम पवर्झ में वचनामृत की पारायण कर रहे हैं, तो कारियाणी के वचनामृत पूरे करके, लोया के वचनामृत की शुरुआत की है, तो यहाँ भी *decoration* में वचनामृत लोया का दर्शन हो रहा है। स्वामिनारायण भगवान अपने प्रगट होने के भाव का दर्शन करा रहे हैं। हे गुरुजी! काकाजी का सेवन करके आप काकाजी रूप बने... अमृतभाई ने आपसे बहुत अच्छी प्रार्थना करी कि जैसे काकाजी ने आपको *select* किया, वैसे आप हम सबको *select* करके, आपके अंदर जो स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति है, वो सबको दे दें, ताकि सब सुखी हों।

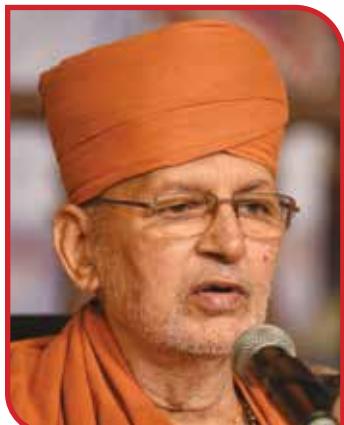
सर्वं भवन्तु सुखिनः, सर्वं सन्तु निरामयाः।

सर्वं भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखं भान्भवेत् ॥



ऐसे भाव से हे गुरुजी! सबको आशीर्वाद देकर सबको सुखी करना—यही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई के आशीर्वचन पूर्ण होते ही, अशोकविहार क्षेत्र के सांसद और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री हर्षवर्धनजी व पूर्व विधायक श्री महेन्द्र नागपालजी, जो कि कई वर्षों से प.पू. गुरुजी के संपर्क में हैं, वे उत्सव में आये। प.पू. गुरुजी को पुष्प गुच्छ और शॉल अर्पण करके उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करी। तत्पश्चात् अपनी अलंकारिक भाषा के माध्यम से, गुणातीत समाज के साधकों को साधना मार्ग में उपयोगी होते अद्भुत भजनों की सौगात देने वाले प.पू. दासस्वामीजी ने आशीर्वाद दिया—



...मुझे तो ऐसा लग रहा है कि जैसे मैं आज 'साधु पर्व' में ही हाजिर हूँ जो कल रात से आनंद महोत्सव महसूस कर रहा हूँ, तो ऐसा लगता है कि मैंने कुछ miss नहीं किया है। 'साधु पर्व' का आनंद तो online हरिधाम में लिया था, लेकिन प्रत्यक्ष रूप में आज यहाँ भी ले रहा हूँ, अभी भी वो उत्सव जारी ही है, ऐसा मैं महसूस कर रहा हूँ...

एक भाई साहब ने आज सुबह कहा कि गुरुजी 86 साल के लगते ही नहीं हैं। पर, शरीर तो शरीर का काम करता है, तो छोटी-बड़ी बीमारियाँ आती हैं और ऐसे बड़े पुरुष भक्तों के प्रारब्ध के कारण ग्रहण भी करते हैं।

वैसे तो हरिधाम में अपने कमरे में बैठे-बैठे मूर्तिप्रतिष्ठा का मैंने लाभ लिया था। लेकिन आज गुरुजी की मूर्ति का दर्शन करके इतना आनंद हुआ कि साक्षात् महाराज-स्वामी, शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी ने प्रवेश करके, शिल्पी द्वारा ये हृबहृ मूर्ति बनवाई। मानो हमारे सामने गुरुजी साक्षात् विराजमान ही हैं। गुणातीत रूप—काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, दिव्य रूप से तो हैं ही, पर यदि स्थूल रूप से होते तो गुरुजी की ये मूर्ति देखकर आनंद से झूम उठते। जैसे मूर्ति में गुरुजी ever young, ever charming, ever carefree, एकदम प्रफुल्लित हैं और 86 साल की उम्र में छोटी-बड़ी बीमारियों से जूझा के भी सुबह से लेकर देर रात तक, आज उनके स्थूल शरीर का जो दर्शन हमें हो रहा है, उससे लगता नहीं है कि वो 86 साल के हैं। तो, महाराज से लेकर सभी रूपों के चरणों में प्रेमस्वामीजी, हरिधाम, सांकरदा, कंथारिया सब संतों की ओर से मैंने यही प्रार्थना प्रस्तुत की कि हमारे गुरुजी को कोई शारीरिक तकलीफ न आये। उनका ऐसा स्वास्थ्य कम से कम शताब्दी तक तो ज़रूर रखना। मुझे भरोसा है कि मेरी प्रार्थना यहाँ विराजमान दिल्ली मंदिर में ठाकुरजी



और सभी गुणातीत स्वरूप मान्य रखेंगे। महंतस्वामीजी के (फोन पर) दर्शन होने के बाद से मैं सोच रहा था कि स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और 39 संत भी हमारे साथ आ गये। वे तो हमारे लीडर थे। 39 में से आज कितने बचे? गुणातीत स्वरूपों की बात छोड़ो, लेकिन संतों में से भी उम्र में हम से छोटे बहुत सारे अक्षरधाम चले गये, उसका बहुत दुःख है। आज महंतस्वामीजी के दर्शन और आशीर्वद मिलने के बाद मैंने ठाकुरजी से यही प्रार्थना करी कि 39 में से अब जो बचे हुए हैं, उसमें सिरमोर गुरुजी हैं और वो सबसे वरिष्ठ हैं। निर्मलस्वामीजी भले 39 में नहीं, लेकिन गुणातीत समाज के हैं ही। फिर उम्र के मुताबिक मेरा नंबर आता है, फिर प्रेमस्वामीजी, फिर विज्ञानस्वामीजी, सांकरदा के सभी संत। काकाजी कहते थे— मङ्गियारा हैया (सांझे दिल)! गुरुजी ने भी यह बहुत सुना है और काकाजी से आशीर्वद पाया भी है। ठाकुरजी की साक्षी में दावे के साथ कह रहा हूँ कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी ने हम सब संतों का मङ्गियारा हैया कर दिया है। गुरुजी भी इसकी साक्षी दे रहे हैं। इसके लिये हमने कुछ नहीं किया। हम तो बस पड़े रहे और स्वरूपों की मरज़ी में ज्यादा से ज्यादा वर्तने की लंघि रखी है। प्रेमस्वामीजी जैसे सौ प्रतिशत वर्ते, तो निहाल हो गये। पर, हम भी निहाल होने से रह नहीं गये। जिसने मन-बुद्धि, तन, मन, धन और आत्मा का जितना समर्पण किया, इतना तो काकाजी और स्वामीजी ने डेढ़ सौ प्रतिशत दिया है। ये खास अवसर प्रवर्चन करने के लिये नहीं होते, ये तो आनंद की अनुभूति करने के अवसर होते हैं। जो आनंद चल रहा है, वो देखने का अवसर है। सब कहते हैं कि गुरुजी ने ये किया, वो किया? तो, गुरुजी ने किया क्या? ऐसे ही कोठारीस्वामी, शार्त्रीस्वामीजी, उपेन्द्रस्वामीजी, महापुरुषस्वामीजी, नंदकिशोरस्वामीजी, निष्कामस्वामीजी उन्होंने क्या किया? दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और यू.पी.—नार्थ इंडिया के लिये गुरुजी ही सर्वस्व हैं। तो, गुरुजी ने spiritually क्या किया? गुरुजी ने गढ़ा प्रथम प्रकरण का 76वाँ वचनामृत सिद्ध कर लिया। इसमें श्रीजी महाराज कहते हैं—

1. जिसमें पंच वर्तमान पालने की कोई कमी न हो।

गुरुजी ऐसे ही हैं। किसी की ताक़त नहीं कि इस विषय में उनमें कोई कमी निकाल सके। बाकी आनंद करें और करवाये वो बात अलग है। ठाकुरजी की साक्षी में यह बात कह रहा हूँ।

2. जीव की पसंद छुड़वा कर, उसे मेरी मरज़ी में रखूँ।

गुरुजी ने यह भी सिद्ध कर दिया। उन्हें और प्रेमस्वामी को दिल्ली नहीं रहना था। गुरुजी सांकरदा में सबके साथ रहते थे और आज भी अकेले सो नहीं पाते, तो दिल्ली कैसे रहते?



क्योंकि यहाँ तो कोई था ही नहीं। भारत साधु समाज और IPSR की बिल्डिंग तो हमें भूतिया महल जैसी लगती थी। पर, गुरुजी ने कोई शिकायत नहीं की, उन्होंने कभी सोचा भी नहीं कि काकाजी को मैं कैसे 'ना' कहूँ।

3. वचन द्वारा कैसी भी कसनी में रखें।

काकाजी, महेन्द्रबापु और गुरुजी को सभा में डांटते थे। जैसे हमारे हरिप्रसादस्वामीजी हरिप्रकाशस्वामी और त्यागवल्लभस्वामी को सभा में डांटते थे। काकाजी, गुरुजी से तो यहाँ तक पूछते थे कि मुकुंद, तुमने योगीजी महाराज को देखा है? काकाजी को मालूम था कि बापा ने गुरुजी को दीक्षा दी है। फिर भी सभा में ऐसे-ऐसे गाढ़ प्रश्न पूछते थे। यूँ काकाजी ने कैसे भी वचन की कसनी में गुरुजी को रखा और उनकी मरजी छुड़वा कर अपनी मरजी में रख कर, 1968 से दिल्ली के महासागर में तैरने के लिये धक्का दे दिया। अब खुद तैरने की क्या बात, ये तो दूसरों को तारते हो गये!

और

4. जो मेरे हिसाब से सबसे डिफिकल्ट है। किसी भी प्रकार देह पर्यंत उदास न हो।

गुरुजी ने स्वामीजी या काकाजी को ऐसा नहीं कहा कि अब मेरी तबियत ठीक नहीं है, तो दूसरे किसी को भाईरवामी, प्रेमस्वामी, शास्त्रीस्वामी, कोठारीस्वामी या और किसी को दिल्ली भेजो। अब मैं नहीं जा पाऊंगा, मैं थक गया। उन्होंने देह पर्यंत सपने में भी ऐसा नहीं सोचा। गुरुजी अभी 86 के हैं, महाराज 100 या 110 साल जब तक भी रखें, हम इसमें *limit* तय नहीं कर सकते। लेकिन, 1966 से मैं गुरुजी की प्रकृति, स्वभाव देख रहा हूँ... काकाजी गुरुजी की जापानी बॉडी कहते थे। उसके बावजूद गुरुजी ने इतना भीड़ा सहन किया, उदासी की तो बात ही नहीं, हजारों की उदासी उन्होंने दूर कर दी। प्रसंग तो बहुत सारे आये, हम साक्षी हैं। लेकिन, ये चार बात गुरुजी ने सिद्ध की। महाराज ये चार बातों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि ऐसा जो हो, उसके प्रति हमें बिना कहे सहज ही प्यार उमड़ता है।

काकाजी भले 1986 में चले गये, पप्पाजी भले 2006 में चले गये, स्वामीजी भले 2021 में चले गये, उसके पहले अक्षरविहारीस्वामी चले गये। लेकिन, इन सबको गुरुजी ने यहाँ बांध कर रखा है। क्योंकि गुरुजी ने ऐसी काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी की कृपा, योगीबापा-शास्त्रीजी महाराज की कृपा, अरे! महाराज और गुणातीत की कृपा प्राप्त की है और प्रसन्नता पाई है और उन्हें धारण करके बैठे हैं...





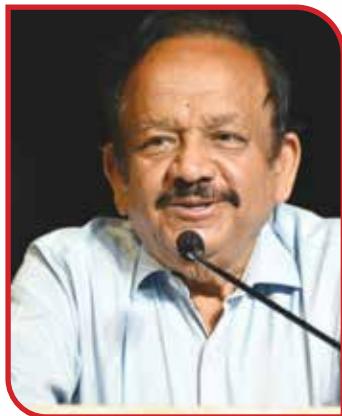
गुरुजी के चरणों में ये प्रार्थना है कि एक ओर से देखें तो जो स्मृतियाँ काकाजी, पप्पाजी, ख्वास तो स्वामीजी ने हमें दी हैं, वो याद करते हैं तो रात को नींद नहीं आती है, रोका आ जाता है। दूसरी ओर आप और प्रेमस्वामीजी जैसे हैं। हमारे सुहृदस्वामी को धन्यवाद है कि वो गुरुजी की परछाई बन कर जीते हैं। गुरुजी बोलें उससे पहले वो एक्शन कर देते हैं। गुरुजी को बोलने की ज़ल्लरत नहीं पड़ती है। बहुत सालों से हम उन्हें देख रहे हैं। हमसे उम्र में छोटे हैं, पूर्वाश्रम से मैं उन्हें जानता हूँ। आज उन्होंने भाईस्वामी की याद दिला दी। जैसे भाईस्वामी ने तन, मन और आत्मा से गुरुजी को सहयोग दिया वैसा ही, बल्कि उनसे सवाया ज्यादा support तो क्या, सुहृदस्वामी ने जीवन समर्पित कर दिया है। गुरुजी का प्रेम और सुहृदस्वामी की परवरिश से ये एकदम smart युवान पढ़े-लिखे संत बने हैं और गुरुजी आगे भी बनायेंगे। साधक या व्रतधारी अंबरीष की नहीं, साधु की भी दीक्षा देंगे। इन्हें अभी तो बहुत काम करना है, अभी तो शुरूआत हुई है। काकाजी कहते थे कि जब सभा में बात करो, तो सभा की बात नौटंकी बन कर ना रह जाये। लेकिन, आपने, कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी, भरतभाई, वशीभाई, महेन्द्र बापु, दिनकर अंकल ने आत्मीयता, कुटुंबभाव, आत्मबुद्धि और प्रीति, सुहृदभाव और सर्वदेशीयता से काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी के हृदय में स्थान लिया है, वैसा स्थान हम आपके और प्रेमस्वामीजी के हृदय में ले सकें, यही प्रार्थना।

Minister of state finance डॉ. श्री भगवत् करड़जी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. श्रीमती अंजलि पिछले वर्ष संभाजी नगर में आयोजित भागवत् सप्ताह दौरान प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई के संपर्क में आये। डॉ. श्रीमती अंजलि प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव का लाभ लेने आई थीं। सो, उनका अभिवादन करते हुए पू. डॉली दीदी ने उन्हें हार अर्पण किया। अशोकविहार क्षेत्र के निगम पार्षद श्री योगेश वर्माजी, राजनीतिज्ञ स्वर्गीय श्री मांगेराम गर्जजी का भी दिल्ली मंदिर के साथ घनिष्ठ संबंध था, सो उनके सुपुत्र श्री सतीष गर्जजी एवं उनके सहयोगी श्री देवराजजी ने मंच पर आकर प.पू. गुरुजी से आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात् डॉ. हर्षवर्धनजी ने सभा को संबोधित किया—

...जैसा कि ये कहा गया कि ये आनंदोत्सव है, हम सब इसको महसूस कर सकते हैं। जीवन में बहुत सारे साधनों से जिस प्रकार का आनंद मिलता है, उससे कई सौ गुना आनंद की अनुभूति आज हम सबको यहाँ पर हो रही है। यह दिल्ली का सबसे पुराना स्वामिनारायण भगवान का मंदिर है। दस साल पहले जब मुझे बुनाव लड़ने का मौका मिला, तब मैं यहाँ आशीर्वाद लेने के लिये आया था। उस दिन से लेकर आज तक मैं इस बात की अनुभूति करता हूँ कि गुरुजी का



व्यक्तित्व बहुत ऊँचा है। मैं उनके पास आऊँ या न आऊँ, सालों या महीनों के बाद आऊँ, उनसे बात करूँ या न करूँ, लेकिन उसके बाद भी उनका असीम स्नेह-प्यार और आशीर्वाद हम सबके साथ रहता है... हम लोग मंदिरों में जाकर अकसर भगवान को ढूँढते हैं। हमारे यहाँ 33 करोड़ देवी-देवता हैं। इसलिये बहुत प्रकार के मंदिर हैं और मंदिरों में भी बहुत प्रकार के भगवान हैं। राम, कृष्ण, महावीरस्वामी जैसों के नाम के आगे भगवान लगा हुआ है। ये लोग सभी हमारी तरह इस दुनिया में आये थे। लेकिन अपने सत्कर्मों के कारण उन्होंने जो महान कार्य किये, सभी प्रकार के आदर्श स्थापित करके दिखाये, उसके कारण इतने लंबे समय के बाद लोग उन्हें भगवान के रूप में याद करते हैं। मैं अभी सोच रहा था कि जैसे अभी काकाजी, स्वामीजी और संतों को याद किया जा रहा था, तो आज से सौ साल के बाद अशोकविहार के आस-पास या दिल्ली के लोग-बच्चे गुरुजी को याद करेंगे, तो उनके कार्यों के कारण उनके नाम के आगे यदि कोई भगवान लगा देगा, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमें जीवन में practically जो भगवान के स्वरूप में नज़र आता है, उसमें भगवान ना देख कर हम मंदिरों में जाकर ढूँढते हैं...



बार-बार एक बात का ज़िक्र आ रहा है कि गुरुजी का 86वाँ जन्मदिन है और सबके दिमाग़ पर 86 नंबर है कि ये 100 या 110 नंबर तक जायेगा या ये बीमार-अस्वस्थ हैं। तो, मुझे केवल इतना कहना है कि गुरुजी तो खुद अंतर्यामी हैं, उन्हें सब कुछ समझ में आता भी होगा कि ये सिर्फ नंबर है, इसे *Chronological age* कहते हैं। आज की हमारी *Modern Medical Science* ने बुढ़ापे के बारे में कहा और समझाया है कि ये *Natural* प्रक्रिया है, जो सबको होना है और एक दिन मरना है। पर, अब *ageing* के बारे में कहा जाता है कि ये भी दूसरी बीमारियों की तरह एक बीमारी है। जैसे दूसरी बीमारियों को हम ठीक कर पाते हैं या रोक पाते हैं या बीमारी को *reverse* कर पाते हैं, ऐसे अब हम *ageing* को भी *reverse* कर सकते हैं, रोक सकते हैं। इसलिये हमारी दुनिया में जो नई *research* बोलती है कि अब जो बच्चे पैदा हुए हैं, वो सवा सौ-डेढ़ सौ साल तक आराम से जीयेंगे। ये जो कुछ भी मैं बोल रहा हूँ, वो *emotional* भावना में नहीं बोल रहा, *science* के मुताबिक बोल रहा हूँ। तो, आज के इस पवित्र अवसर पर हम सब इतनी प्रार्थना करें कि हमारे गुरुजी के पास कहने के लिये बीमारी





के नाम पर जो भी हो, वो सारी चीजें धीरे-धीरे लुप्त होनी शुरू हों और एक नये स्वास्थ्य का उदय होना शुरू हो। उनकी आयु लंबी हो, उसमें हमारा अपना स्वार्थ है। वे लंबे समय तक हम सबको अपना आशीर्वद देते रहें और हमें उनका मार्गदर्शन मिलता रहे। इतना ही कहूँगा कि भगवान हमारी आयु में से निकाल कर, थोड़ी उनकी आयु में डाल दें। इससे हमें ना तो किसी तरह का संकोच है और ना कोई आपत्ति है। क्योंकि हमें पता है कि उनको जितना ज्यादा से ज्यादा समय मिलेगा, उसके माध्यम से देश, समाज और मानवता का उतना ही ज्यादा गुना भला होगा। तो आज के इस अवसर पर हम सब मिलकर भगवान से उनके बेहतर स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना करें...

इसी दौरान निगम पार्षद श्रीमती चित्रा विद्यार्थीजी (आम आदमी पार्टी) एवं निगम पार्षद श्रीमती पूनम भारद्वाजजी (भाजपा) उत्सव का लाभ लेने आईं, सो पू. अंजलि गोयलजी एवं पू. अनिता दुरेजाजी ने इन दोनों का हार से स्वागत किया।

‘साधु पर्व’ पर प.पू. गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा हेतु प.पू. दासस्वामीजी ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपना भाव व्यक्त करते हुए गुजराती भजन – ‘आ तो साक्षात् प्रभुनी मूरत छे...’ बना कर भेजा था। 25 दिसंबर 2023 को मूर्तिप्रतिष्ठा के समय तो वह गाया था, परंतु आज प.पू. दासस्वामीजी की हाजिरी में डॉ. पू. दिव्यांग ने वह प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् 247 दिन का अपना मौन व्रत आज ही के मंगलकारी दिन संपूर्ण करके, पैठण गादी के महंतश्री प.पू. प्रकाशदासजी महाराज ने आशीर्वद दिया—



...आज जिस पावन शुभ कार्य के लिये आप सभी उपस्थित हैं, वो है प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन! जो मौन व्रत हमने चातुमास 2022 की आषाढ़ी एकादशी से आरंभ किया था, आज पूर्ण विधि से उसकी पूर्णाहुति की और उसका सारा पुण्य प.पू. गुरुजी के चरणों में समर्पित किया है...

15 दिन पहले हम मालेगांव के एक कार्यक्रम में उपस्थित थे और वहीं से इस कार्यक्रम का संकेत मिलना आरंभ हो गया था। किस कारण से, ये मुझे समझा नहीं आया। परंतु मालेगांव से हैदराबाद होते हुए ठीक 15वें दिन कल हम यहाँ उपस्थित हो गये। हैदराबाद हमें निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। जिन्होंने वह भेजा, वे भी रखेही हैं।



...गुरुजी को जो 100 साल से भी अधिक समय लगने वाला था, वो अभी से 100वाँ साल से अधिक प्राप्त हो गया है। ये न सोचें कि आज कौन-सा वर्ष है? ये सोचिये कि 100वाँ वर्ष शुरू हो गया है। अगले साल 101 होगा, ये समझना है। *Positive thinking* रखेंगे, तो जीवन में कोई संकट आता नहीं है। श्री स्वामिनारायणजी अपने जीवन में अपने स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि अन्यों के मार्गदर्शन के लिये प्रगट हुए। उन्हीं के पदकमल आशीर्वद आप सभी को प्राप्त हो गये हैं। श्री गुरुजी ऐसे हैं कि जो एक बार देखेंगे, तो अपना तो पूर्वजन्म है ही, पर जो कृष्ण परमात्माजी ने वचन दिया था कि हम जन्म लेते रहेंगे और वापिस भवतों से मिलते रहेंगे, तो गुरुजी को भी ऐसे ही आशीर्वद प्राप्त हैं, तभी आज वे हम सभी के सामने उपस्थित हैं और उपस्थित रहेंगे। हैदराबाद से दिल्ली की flight 45 मिनिट पहले ही पहुँच गई। पूर्व आगमन होना इस बात का संकेत है कि गुरुजी ने याद किया है। मौन व्रत की पूर्णाहुति होने के कारण आज ज्यादा बोल नहीं पा रहा हूँ, लेकिन इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप सभी भाग्यवान हैं। जो व्यासपीठ पर उपस्थित हैं, जो पंडाल में उपस्थित हैं और जो घर बैठे सुन सकते हैं, उन सभी को गुरुजी का आशीर्वद प्राप्त है ही। उसी में काकाजी, पप्पाजी व सभी संतों का परिपूर्ण शुभाशीर्वद प्राप्त है, जो इस परिवार में शामिल हैं और होते रहेंगे।

मंगल अवसरों पर भक्त किसी न किसी रूप में अपने गुरु को अपनी भावना प्रकट करना चाहते हैं। सो, हार अर्पण विधि के कार्यक्रम में सर्वप्रथम संतों, युवकों, हरिभक्तों, बहनों व भाभियों के सहकार से प.पू. गुरुजी के जीवन का दर्शन कराते सांकेतिक विशिष्ट हार का विवरण देते हुए, निम्न प्रार्थना सभी की ओर से पू. राकेशभाई ने की—

16 हजार 786 थर्माकोल की रंगबिरंगी छोटी-छोटी balls पर ka-ka लिखा हुआ है। तो, 16 यानि sweet 16 की भाँति गुरुजी ever young हैं, जिनमें एक निर्दोष बालक की झलक दिखती है। 7 तारीख गुरुहरि काकाजी महाराज की स्वधामगमन तिथि और आज गुरुजी का 86वाँ प्राकट्य दिन है। दूसरी बात, हार के दोनों तरफ 86-86 लड़ियाँ हैं। 21 फरवरी से शुरू करके 9 मार्च को यह हार पूरा हुआ।

ka-ka लिखे बोल्स एक-दूसरे से जुड़ कर 'काका' शब्द बनाते हैं। जो प्रतीक हैं कि गुरुजी का संपूर्ण जीवन काकामय है और उन्होंने सबके अंतर में काकाजी को बसा दिया है। दूसरी बात—इतनी सारी बोल्स हार में लगने के बावजूद इनका कोई वज़न नहीं है। इसी प्रकार, हम भिन्न-भिन्न प्रकृति व स्वभाव वालों को गुरुजी ने अपने आश्रय में लिया है और उन्हें हमारे किसी भी स्वभाव या दोष का कोई भार नहीं है। जैसे कि स्वामी की बातों में लिखा है कि हम सोचते हैं कि





हमें सत्पुरुष से प्रीति है, पर दरअसल सत्पुरुष को हमसे कई गुणा प्रीति होती है। देखा जाये तो ऐसी गुणातीत विभूति गुरुजी ने हमसे कई गुणा अधिक प्रीति की है। क्योंकि हम तो कई बार अपने मन के भावों में बह कर, नकारात्मक विचारों से घिर कर, उनकी उपेक्षा भी कर देते हैं, लेकिन उनकी कल्पना की कोई सीमा दिखाई नहीं पड़ती। सभी खलपों के श्रीचरणों में विनती है कि हमारी प्रार्थना सिर्फ बोलने में न रहे, हम दिल की सच्चाई से संकल्प करें कि हमें मिले प्रगट प्रभु को किसी भी प्रकार विवश न करें और जैसे उन्होंने हमारे किसी भी दोष-स्वभाव का भार नहीं रखा, तो टोटल उनके होकर जियें और संबंध वाले मुक्तों के दोष-स्वभाव का भार न रख कर, इन *balls* की तरह काकामय और हल्के हो जायें, ऐसा आप हमें बना देना...

प.पू. गुरुजी को यह हार भक्तिभाव से युक्त पू. डॉ. शशिकांत मिश्रा (डॉ. बंटी) ने अर्पण किया और तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने प्रसादी का यह हार उन्हें पहना दिया। डॉ. बंटी का परिचय देते हुए पू. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी को आई slip disc की तकलीफ के निदान का पूरा प्रसंग बताया, जो कि आत्मीयता, भक्ति, भजन और सत्पुरुष के आशीर्वाद का दर्शन कराता है—

हम सभी को मालूम हैं कि जनवरी में slip disc के कारण प.पू. गुरुजी को बहुत दर्द था और चलने में अत्यधिक तकलीफ थी। इतनी तकलीफ में देख कर आत्मीय डॉक्टर्स पू. डॉ. कैलाश सिंहजी, पू. डॉ. कमल दुरेजाजी और पू. डॉ. दिव्यांग को ऐसा हुआ कि छोटी सर्जरी या इंजेक्शन लगा कर इनका दर्द कम किया जाये और फिर बाद में एक्सरसाइज़-फिज्योथेरेपी करवा के इन्हें स्वस्थ करें। तब मंदिर से धनिष्ठता से जुड़े Orthopedic Physician पू. डॉ. शशिकांत मिश्रा यानि डॉ. बंटी जिन्होंने Osteopathy for Spine Injuries & Sports Medicine में PhD. करी है, उन्होंने कहा कि मुझे कुछ दिन का समय दो, कुछ treatment देने से प.पू. गुरुजी को अच्छा हो जायेगा और सर्जरी या इन्जेक्शन की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। साथ ही संतभगवंत साहेबजी के खूब करीबी आत्मीय पू. डॉ. भरतभाई द्वे जो कि Spine Surgeon हैं, वे भी 3 फरवरी की सायं खास प.पू. गुरुजी को देखने आये और सलाह दी कि प.पू. गुरुजी को इन्जेक्शन देने की ज़रूरत नहीं है। वे rest करेंगे, तो करीब 90 दिन में दर्द चला जायेगा।

गुरुहरि काकाजी और प.पू. गुरुजी हर प्रसंग पर भजन का उपाय लेने के लिये कहते हैं। सो, इस निमित्त सभी ने एक घंटे का भजन शुरू कर दिया। तभी प.पू. गुरुजी की तबियत देखने 9 फरवरी को प.पू. वशीभाई और पू. अश्विनभाई पवई से पथाए और 90 दिन की बात सुन कर प.पू. वशीभाई ने कहा— एक दिन, एक ही समय 90 भक्त एक घंटा धून करेंगे, तो 90 घंटे का भजन हो जायेगा और गुरुजी 90 दिन की बजाय 9 दिन में अच्छे हो जायेंगे। यूँ प.पू. वशीभाई ने अपने



आशीर्वाद से मुक्तों को राह दिखा दी। फिर तो उनकी आङ्गा से प.पू. दीदी ने 14 फरवरी की शाम को एक घंटे की धुन का आयोजन कराया, जिसमें करीब 150 मुक्तों ने एक साथ भजन किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने भी भक्तों की गुहार सुन कर धीरे-धीरे अपनी अस्वस्थता समेट ली। साथ ही काकाजी के शब्दों में प्रभु ने सभी डॉक्टर्स की भावना को पंख दिये और तकरीबन बीस-पच्चीस दिन में प.पू. गुरुजी को काफ़ी अच्छा हो गया और आज वे हमें स्वस्थ रूप से यहाँ दर्शन दे रहे हैं। डॉ. बंटी greater noida रहते हैं, लेकिन गुरुजी को treatment देने के लिये दिन या रात देखे बिना मंदिर आ जाते... ऐसे सभी आत्मीय डॉक्टर्स को अंतर से नमन!

तत्पश्चात्—

पानीपत के पू. नवनीत गोयलजी व मोगा के पू. विकास वर्माजी ने हरियाणा व पंजाब के मुक्तों की ओर से

पू. डॉली दीदी (मुंबई) द्वारा बनाया विशिष्ट हार पू. अभिषेक त्रिवेदीजी तथा पू. निमेषभाई शाह ने मुंबई व गुजरात के मुक्तों की ओर से

पू. हरिप्रकाशस्वामी, संतों तथा सहिष्णु भाइयों ने हरिधाम की ओर से

प.पू. राजुभाई ठक्कर एवं प.पू. अश्विनभाई ने पवर्झ मंदिर की ओर से

प.पू. दासस्वामीजी के संपर्क से आये दिल्ली—मानव मंदिर मिशन के योग गुरु पू. अरुण योगीजी एवं

दिल्ली मंदिर के भजनों को संगीतबद्ध करने वाले संगीत निर्देशक पू. रतन प्रसन्नाजी ने हार व पुष्प गुच्छ से प.पू. गुरुजी के प्रति भाव व्यक्त किया।

और...

प.पू. दासस्वामीजी, महंत श्री प्रकाशराजजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अरुण योगीजी का संतों व सेवकों ने हार से अभिवादन किया।

बहनों के विभाग में पवर्झ की पू. लीलू बहन का स्वागत पू. स्तुति शर्मा ने हार अर्पण करके किया।

हार विधि संपन्न होने के बाद पू. अरुण योगीजी ने सभा को संबोधित किया—

...तीथल में मेरा दासस्वामीजी महाराज से मिलना हुआ। जब-जब वे दिल्ली आते हैं, तो मुझे आशीर्वाद देते हैं और फोन करके यहाँ अशोक विहार में गुरुजी से मिलवाया। हौस्टन में मुझे महंतस्वामीजी का नाड़ी परीक्षण करने का अवसर मिला और आज गुरुजी के चरणों में सेवा करने का अवसर मिल रहा है...

एक मुक्तक अर्पण करता हूँ—



नज़र को बदलिये, नज़ारे बदल जायेंगे।
 सोच को बदलिये, सितारे बदल जायेंगे।
 किशितयाँ बदलने की ज़रूरत नहीं,
 धार को बदलिये किनारे बदल जायेंगे।
 ये धार कौन बदलता है? हमारे प्रेरणास्रोत गुरुजी!
 हमारी दृष्टि कौन बदलता है? हमारे प्रेरणास्रोत गुरुजी!
 आप परम सौभाग्यशाली हैं कि
 ऐसे संतों की शरण आपको मिली है,

जिनसे अंदर का पूरा जीवन परिवर्तित-रूपांतरित हो जाता है।

एक मुक्तक और भेंट करना चाहूँगा—

पहले तो हम पत्थर को तराशते हैं, फिर उसमें परमात्मा तलाशते हैं।

जिसने तराशा है अपने आपको, उसे खयं परमात्मा तलाशते हैं।

ये तराशने की कला कौन सिखाता है? हमारे पूज्य गुरुजी!

हम यही संकल्प लेकर जायें कि हमारे गुरुजी निरोगी हों और 86वें जन्मोत्सव पर हम कामना करते हैं कि आप शतायु व दीर्घायु हों...

तत्पश्चात् प.पू. प्रकाशराजजी महाराज ने श्री ठाकुरजी के आशीर्वाद रूप स्मृति भेंट प.पू. गुरुजी को अर्पण की और भारत नगर पुलिस स्टेशन के Add. S.H.O. श्री यशवंत यादवजी एवं उनके साथियों ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। पू. पुनीत गोयलजी ने पूर्व निगम पार्षद श्री सुरेश भारद्वाजजी का हार से स्वागत किया।

प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव का कार्यक्रम तो था ही, पर ऐसे शुभ अवसर पर संतों का आशीर्वाद लेने आये दिल्ली मंदिर से जुड़े कई आत्मीय डॉक्टर्स की हाजिरी से, सहज ही 'डॉक्टर्स डे' भी आयोजित हो गया—

1997 में प.पू. गुरुजी को जब पहली बार हार्ट की तकलीफ आई, तब पू. डॉ. मुकेश भट्टाजी (Cardiologist) ने उनकी जाँच की और सही उपचार की सलाह दी।

संतभगवंत साहेबजी द्वारा दिल्ली मंदिर को सौंगात के रूप में मिले पू. डॉ. कैलाश सिंहजी (Nephrologist), जो केवल प.पू. गुरुजी को ही नहीं, वरन् मंदिर से जुड़े सभी को चिकित्सा सलाह देकर उपायभूत होते हैं।



पू. डॉ. अनिल मोंगाजी (ENT), प.पू. गुरुजी को जब भी ENT से संबंधित तकलीफ़ होती है, तो ये खुद मंदिर आकर उन्हें देख लेते हैं।

पू. डॉ. तुषार चावलाजी (Dentist), जो कि अपनी व्यस्तता के बावजूद, देर रात को भी अपने clinic से फारिश होकर, 'अर्ची क्लीनिक' में प.पू. गुरुजी के दाँतों का इलाज करने आते हैं।

पू. डॉ. अंकित (Anesthesiologist), जो कि अपनी पत्नी पू. डॉ. सुष्टि (Radiologist) द्वारा बहुत ही कम समय में अपनेपन से जुड़ गये हैं।

पू. डॉ. नवल (Homeopathic) एवं उनकी पत्नी पू. डॉ. प्रीति (Homeopathic), जो कि पू. दीपक सेठजी के संपर्क से ना केवल प.पू. गुरुजी से खूब अपनेपन से जुड़े हैं, बल्कि अपनी चिकित्सा दक्षता से मंदिर के संतों, युवकों, बहनों और हिंभक्तों की सेवा करते हैं।

पू. डॉ. प्रवीण शर्माजी (Physician), जो कि मंदिर के नज़दीक रहते हैं और करीब 40 साल से चिकित्सा सेवा और सलाह का लाभ दिल्ली मंदिर के मुक्तों को दे रहे हैं। यूँ कहे कि प्राथमिक चिकित्सा के लिये सर्वप्रथम उन्हें ही याद किया जाता है।

पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा (Physician, Health Officer-MCD), इनका तो जन्म ही सत्संग में हुआ और मानो लालन-पालन ही प.पू. गुरुजी की गोद में हुआ है। वे अपनी पत्नी पू. डॉ. राया शर्मा (Physician, Health Officer-MCD) सहित सत्संग समाज की सेवा के लिये हमेशा तत्पर रहते हैं।

इन सभी डॉक्टर्स को उनकी अपनत्वभरी चिकित्सा सेवाओं के लिये हार से सम्मानित किया गया।

संबंध की महिमा समझ कर गुणगान करना जिनका सहज स्वभाव है, ऐसे प.पू. भरतभाई ने तत्पश्चात् आशीष वर्षा की—



...गुरुजी के प्राकट्य दिन पर भीतर में बहुत ही भाव उमर आते हैं। संक्षेप में कहें तो भगवान् स्वामिनारायण पृथ्वी पर आये, साथ में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को लाये और साधना करने वाले सभी मुमुक्षुओं के लिये राजमार्ग खोल दिया। स्वामिनारायण भगवान की कृपा से ऐसे गुणातीत संत का प्रगटभाव अखंडित रहा और ऐसे संत गुरुजी का प्रागट्य दिन मना रहे हैं, तो उनका दर्शन करके ऐसा भाव होता है। स्वामिनारायण भगवान के समय की बात है कि उनके संत बहुत जगह विचरण करके आये, तब श्रीजी महाराज एक वृक्ष



के नीचे बैठे थे, उन्होंने संतों से पूछा कि सब जगह जाकर आये, तो मनुष्य कैसे थे? संतों बहुत अच्छा जवाब दिया कि महाराज, मनुष्य तो यहाँ वृक्ष के नीचे बैठा देख रहे हैं, बाकी जगत में सब पशु समान ही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे गुणातीत संत के संबंध में आने से, पहले तो हम मनुष्य बनते हैं।

एक सभा में एक संत ने सबसे पूछा कि आप कौन हो? किसी ने जवाब दिया कि मैं डॉक्टर हूँ। किसी ने कहा कि मैं इंजीनियर हूँ। किसी ने जवाब दिया कि मैं चार्टड एकाउण्टेंट हूँ। किसी ने कहा कि मैं एडवोकेट हूँ। यूँ सबने अपना परिचय दिया, लेकिन किसी ने ऐसा नहीं बोला कि मैं मनुष्य हूँ। तो, गुरुजी हमें ये सिखाते हैं कि उनके संबंध में आने से छोटे से छोटे भक्त को ऐसा होता है कि मैं स्वामिनारायण भगवान का-गुरुजी का हूँ। यह इनकी हम पर करुणा है। तो, हम सही अर्थ में मनुष्य बनें। मनुष्य बनना आसान बात नहीं है। इसलिये ऐसे संत के संबंध में आना ही मनुष्यता है। अगर ऐसे संत के संबंध में नहीं आये, तो मनुष्य हैं ही नहीं। गुरुजी के संबंध में हम आये हैं, तो केवल उनके संबंध में आने से ही हमारा बहुत बड़ा काम हो गया है। फिर उनका होकर जीने से और काम होगा।

गुरुजी के संबंध में जो-जो आये हैं, उन्हें इतना तो महसूस होता ही है कि गुरुजी कभी मेरा बुरा नहीं करेंगे। वे हमेशा मेरा हित ही करेंगे। यही संत का लक्षण है और ये भाव हम हमेशा गुरुजी में देखते हैं। तभी तो छोटे बच्चे को भी गुरुजी के प्रति ये भाव आता है कि वे मेरे हैं। आज सुबह गुरुजी के साथ बैठे थे, तब ओ.पी. अग्रवाल साहब की पोती लीला जिस भाव से गुरुजी का दर्शन कर रही थी, तो ऐसा लगता था कि जैसे कोई बड़ी आत्मा या बड़ी व्यक्ति देखती हो। ये भाव ऐसे-वैसे नहीं आता है, गुरुजी भगवान को धारण किये हुए हैं इसलिये आता है। ये हमें मिले हैं इसलिये हम बहुत भाग्यशाली हैं। गुरुजी के संबंध में आने से बहुत बड़ा लाभ होता है। गुरुजी एक साधक हैं, भजनीक हैं, यह उनके जीवन में हमने हमेशा देखा है। वे हमेशा भजन-प्रार्थना करते हैं और हमें सिखाते हैं कि कैसे भजन-प्रार्थना करनी चाहिये; किस प्रकार गुरु के साथ संबंध बनाना चाहिये। ऐसे गुरुजी के संबंध में आने से हमें बहुत प्राप्ति होती है... हमारे दो भक्त-दलजीत सिंहजी और लवली ने सेवक की दीक्षा ली। साधु बनना इज़्ज़ी है, पर साधुता प्राप्त करके जीना है और गुरुजी ऐसी साधुता वाले को साधु बनाते हैं...

गुरुजी एक गुणातीत संत हैं। भगवान को अखंड धारण करके जीते हैं। काकाजी के साथ का उनका संबंध हमने छोटी-छोटी बातों में भी देखा है। काकाजी के साथ उनका एक अद्वितीय संबंध



था और काकाजी केसे पुरुष हैं, उसका दर्शन गुरुजी ने बहुत बार हमें कराया है व बहुत बार उसकी महिमा भी बताई है...

आज जो सब यहाँ बैठे हैं, वो गुरुजी की महिमा है। काकाजी के आशीर्वाद व संकल्प से गुरुजी ने यहाँ अद्भुत सर्जन किया है। अभी बच्चों का annual फंक्शन था, तो मैं उन्हें बता रहा था कि बच्चा तीन जगह से सीखता है—

1. अपने माँ-बाप से सीखता है। माँ-बाप घर में जिस प्रकार बर्ताव करते हैं, वैसा बच्चा भी सीखता है।
2. स्कूल में टीचर और स्टूडेंट बगैरह से सीखता है।
3. जगत में, बाहर जाकर सीखता है।

भक्त गुणातीत संतों के संबंध में आते हैं, उन्हें प्रेरणा मिलती है कि हमें इनके अनुसार जीवन जीना है। हम भाव्यशाली हैं कि हमें ऐसे गुणातीत संत मिले हैं, तो हमारी दृष्टि बाहर का देखने के लिये नहीं जायेगी। हमारी दृष्टि गुरु और उनके भक्तों के गुणों के प्रति रहेगी। ऐसी दृष्टि बनाने के लिये गुरुजी ने ये समाज बनाया है, कुटुंबभाव दर्शाया है। यहाँ कोई भी आता है, वो बाहर की दृष्टि भूल ही जाता है। केवल भगवान्, भगवान् के भक्तों और ऐसे संतों के गुणानुवाद में वो फूंके रहते हैं।

गुरुजी हमें बहुत कुछ देना चाहते हैं और दे रहे हैं, तो आज गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है कि हम वो जी लें। अपने जीवन में *imbibe* करें और गुरुजी को अंतर में ठंडक दिलायें। मैं पूरे गुणातीत समाज की ओर से माँगता हूँ कि गुरुजी आप ऐसा आशीर्वाद देना। आज दासस्वामी ने बहुत बड़ी बात बताई कि हम सब एक हैं, ऐसा हम महसूस करते हैं। ‘सांझे दिल’—यह बहुत बड़ी बात है और ऐसे भाव को गुरुजी ने *spread* किया है। सो, गुरुजी को जितना धन्यवाद दें, उतना कम है।

यहाँ आनंदी दीदी बगैरह सब बहनों और सेवक मंडल को गुरुजी के सिवाय और कुछ दिखता नहीं है। भक्तों को किस प्रकार संभालें कि गुरुजी राजी हो जायें। यही भाव उनके हृदय में हमेशा है। हमारे राजुभाई यहाँ एक महीने से रह रहे हैं और वे भी ये दर्शन करते हैं। हमने दिसंबर में 23, 24, 25 को ‘साधु पर्व’ मनाया था। तब जो महोत्सव मनाया था, उससे भी अधिक ये महोत्सव मुझे सौ गुना अच्छा लग रहा है, क्योंकि सब निजी भक्त बैठे हैं। गुरुजी से एकदम जो जुड़े हैं, ऐसे निजी भक्त हैं। आज जैसे ये अङ्गियल घोड़ी का प्रसंग बताया है, वैसे ही हमारे





स्वभाव टालने के लिये गुरुजी प्रयत्न तो करते ही हैं, लेकिन हमें डांटना, कहना और हमारे अंदर के negative स्वभाव जो भगवान की प्रसन्नता में बाधारूप हैं, भगवान की दृष्टि से अच्छे नहीं हैं, वो किसी भी तरह आप टालो और उसके लिये हम आपको पूरी permission देते हैं। हम लठेंगे नहीं, कभी दुःखी भी नहीं होंगे और आपकी प्रसन्नता पाने के लिये हमेशा प्यासे रहेंगे, यही प्रार्थना।

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने पू. जयप्रकाश प्रजापतिजी (स्वामिनारायण स्वीट्स) द्वारा मंदिर में दिये गये Electric Scooter की सेवा के विषय में सभा को अवगत कराया और पवर्झ मंदिर में उत्सव का online दर्शन कर रहे, पू. हरखचंदभाई व पू. घनश्यामभाई की ओर प्रार्थना रूपी हार पू. अश्विनभाई तथा पू. हेमंतभाई मर्चेट द्वारा प.पू. गुरुजी को अर्पण करने के लिये प्रार्थना की। तदोपरांत पू. राकेशभाई द्वारा रचित नूतन भजन—

आपके संबंध में जो आया, दिल में उसके ‘काका’ को बसाया... पू. डॉ. दिव्यांग ने प्रस्तुत किया और... उत्सव के समापन में प.पू. गुरुजी ने आशीर्दान दिया—



...हम सबको भी अनुभव है और किसी से पूछेंगे, तो वो यही कहेगा कि मझे, ये स्वभाव बहुत परेशान करता है। ये जो मैं बात कर रहा हूँ, उससे आप सब भी सहमत होंगे कि ज्यादा परेशानी तो अपने स्वभाव की होती है और हम मंदिर भी इसीलिये जाते हैं कि चलो, वहाँ ऐसे संत होंगे जिनके संबंध, उनकी आङ्गी का पालन करने, उनकी मरज़ी में रहने एवं वे जो कहें वो करने से स्वभाव टल जायेंगे और हम परेशानी से मुक्त हो जायेंगे। ये एक हिन्दू धर्म की, भारत की सालों-युगों से चली आ रही belief है। आज भी वो परंपरा जारी है। साधारणतः सत्संग का अर्थ हम ये समझते हैं कि कथा या संतों की गाणी सुनना सत्संग है। कथा सुनना भी एक fashion बन जाता है। ये बात मैं हमेशा दोहराता हूँ कि कोई पूछेगा कि कहाँ गये थे, तो कहेंगे कि फलां जगह कथा में गये थे और हम मानते हैं कि हम सत्संग करके आये हैं। पर, उससे अपने स्वभाव तो टलते नहीं हैं।

यदि सत्संग सही मायने में किया होता, तो स्वभाव टल जाते। स्वभाव टल जाते मतलब अपना चेहरा भी बदल जाता। जो चिङ्गिझापन, जो गुस्सा, कपाल के ऊपर जो सलवटें पड़ जाती हैं; वो सब जब गायब हो जाये, तब समझना की तुमने सत्संग किया है। ये नहीं होता, तो समझना



कि हम भवित करके आये हैं, लेकिन सत्संग नहीं हुआ। जो काकाजी के पास रहे हुए हैं; उनकी कथा सुनी है, वे ये जानते हैं कि काकाजी कहते थे कि **सत्संग यानि सत्पुरुष!** इसका मतलब क्या कि सत्पुरुष के साथ एक दृढ़ संबंध कर लिया हो, वो सत्संग है। फिर चाहे कथा में बैठें या न बैठें, उसका कोई मायने नहीं रहता। तो ये सत्संग करके हमें अपने आप में बदलाव लाना है और इसीलिये हम मंदिरों में, सत्संग और कथा में आते हैं कि ऐसे संत के साथ अपना एक संबंध दृढ़ हो जाये। नई कोई बात नहीं करनी है।

यहाँ मंदिर में आकर सुहृदस्वामी, गुजरात में रहने वाले प्रेमस्वरूपस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, दासस्वामी, मुंबई रहने वाले भरतभाई, वशीभाई जैसे संत के साथ एक संबंध पक्का करें। संबंध करने का मतलब? भले दुःख लगे, लेकिन हम अपनी मनमानी छोड़ कर, संत की जो मरजी हो-वे जैसे राजी हों, वो ही हम करने लग जायें। तो, गुरुजी के जन्मदिन पर आये, उसकी फलश्रुति यही मिलनी चाहिये कि ऐसे संत के साथ का संबंध दृढ़ करके आज जायें और जो स्वभाव परेशान करता है, वो टल जाये! स्वभाव टल जायेंगे, तो हम सुखी हो जायेंगे। हरेक को सुखी होना है; हरेक का उद्यम भी यही होता है, तो उसका तरीका ये है। कितनी भी दौलत कमा लें, कितने ही बच्चे हो जायें, कितना ही परिवार के अंदर ठीक-ठाक होता जाये, लेकिन हम सुख महसूस नहीं करेंगे। सुख तो ऐसे संत के साथ के संबंध से आयेगा। सुख और आनंद एक साथ बंधे हुए हैं। आनंद में रहेंगे तो लगेगा कि सुख आया, सुखी होंगे तो कहेंगे कि आनंद में आना है। ऐसे सत्संग के अंदर आकर हमें सुख और आनंद प्राप्त कर लेना है।

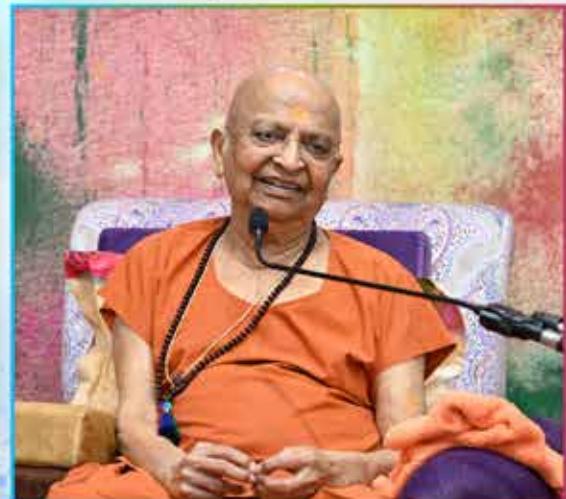
भरतभाई वगैरह सब आये हैं, मैं फिर से कहता हूँ कि ऐसे संत के दिल को ठंडक कर दें। स्वामीजी ने एक बार बात बताई थी कि साधु के दिल में ठंडक कर देंगे; तो हमारे दिल में ठंडक हो जायेगी, सीधा-साधा तरीका है। साधु के दिल में ठंडक कब हो जायेगी? जब हम साधु की मरज़ी में जीना शुरू कर देंगे। उनके संबंध वाले भक्तों को भी हम दिव्य मान कर; उनका स्वरूप मान कर उनके साथ संबंध बृद्ध कर देंगे, तब स्वामी कहो या गुरु, वे राजी हो जायेंगे। ये तरीका अपना कर हमें जो संत मिले हुए हैं, उन्हें राजी करने लग पड़ें। यही आज के दिन की प्रार्थना... काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी हमें ऐसे आशीर्वद दें—यही प्रार्थना।

भक्तों को नूतन स्मृतियाँ देते हुए, फूलों से सुसज्जित बैटरी कार में बिराजमान होकर स्वरूपों ने सभा मंडप में से प्रस्थान किया। इसी दौरान, भजन—मरज़ी में तेरी मिट जायें... पर, नाचते हुए कुछ हरिभक्तों ने आनंद किया और महाप्रसाद लेकर सभी धन्य हुए।

7 मार्च - गुरुद्वारि काकाजी महाराजी स्वधामगमन दिन एवं हुताशनी की संदृश्या पर द्वित्य दृश्यन



अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के ग्राकट्ट्य दिन की सभा





8 मार्च 2023 धुलेन्डी
संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि पर महापूजा





हाथ लिये रंगभर विचकारी, खेलत प्रभु संग होली...



जहाँ सद्गुरु खेले बरसत, यरम ज्योति जहाँ साधु संत...





हम तुम संग प्रभु खेलन चाहें, होत उमंग उर भारी
होरी आई श्याम बिहारी... हाथ कंचन विचकारी...



ऐसे रंग दे तू मुझको तेरे रंग में ओ यिथा, और कोई रंग मुझ ये कभी लागे नहीं...•





2023 की अविस्मरणीय हुताशनी व धुलेन्डी

पवर्झ मंदिर के एक भजन की पंक्ति है—

जैसे सूरज का ढलना, होती है बस एक भ्रमणा, वैसी ही घटना तुम्हारा जग से विदा होना...
सच, 7 मार्च 1986 को गुरुहरि काकाजी महाराज ने भले ही स्थूल विदाई ली, लेकिन यह एक भ्रमणा ही है, क्योंकि पुराने मुक्त जिन्होंने उनके दर्शन-समागम का सुख पाया है; उन्हें तो अनुभव है ही, परंतु गुरुहरि काकाजी महाराज के ज्योतिर्धर प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और योगेश्वरों ने जिस प्रकार उन्हें जीवंत रखा है, उससे संबंध में आने वाले नये मुक्तों को भी ऐसी ही प्रतीति होती है कि आज भी इन सबके द्वारा गुरुहरि काकाजी के प्राण धरती पर धबक रहे हैं। सो, गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन—7 मार्च जब आता है, तो भीतर में प्रार्थना होती है कि जिनके द्वारा आज आप प्रगट हैं, बस उन्हें राजी कर लेने की तान रहे, जिससे आप राजी हो जायें। अबकी बार की 7 मार्च का तो संयोग कैसा कि जिन्होंने अपने प्रगट प्रभु की प्रसन्नता पाने के लिये सारी सीमाएँ पार कर दीं, ऐसे अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की प्राकट्य तिथि—होली इसी दिन आई। अतः अनादि महामुक्त भगतजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में भजन संध्या हुई और अंत में सबने होली निमित्त ‘फगवा’ का प्रसाद लिया।

अबकी बार मंदिर में धुलेन्डी एवं संतभगवंत साहेबजी के प्राकट्य दिन पर चंदनोत्सव का विशिष्ट आयोजन था, सो पंजाब से करीब 70-80 हरिभक्त आये थे। 8 मार्च की सुबह करीब 9 बजे मंदिर के पीछे प्रांगण में बनाये स्टेज पर पू. मैत्रीस्वामी ने महापूजा आरंभ की। स्टेज की पृष्ठभूमि पर संतों-मुक्तों के साथ रंगोत्सव करते श्वेत वस्त्रधारी श्रीजी महाराज का दर्शन हो रहा था। साथ ही गुणातीत स्वरूपों के भी दर्शन हो रहे थे। स्टेज के आगे बड़े कुंड में रंगीन पानी में दो बड़ी पिचकारियाँ रखी थीं। महापूजा संपन्न होने के बाद, प.पू. गुरुजी ने चांदी की छोटी-सी पिचकारी से सर्वप्रथम श्री ठाकुरजी को चंदनयुक्त जल अर्पण करके धुलेन्डी पर्व की शुरुआत की। तत्पश्चात् पू. मैत्रीस्वामी, पू. आशिष एवं साथियों द्वारा तैयार की गई बड़ी पिचकारी से, प.पू. गुरुजी ने लगभग एक घंटा लगातार सभी मुक्तों पर चंदन के जल की वर्षा की। यह अविस्मरणीय धुलेन्डी सबको जीवनभर के लिये याद रह जाये और प.पू. गुरुजी के प्रासादिक जल से रंगे वस्त्रों को संजो कर रख पायें, ऐसी भावना से अधिकांश मुक्त श्वेत वस्त्र पहन कर आये थे। प.पू. गुरुजी के स्नेह जल से भीगे मुक्तों के वस्त्र जब चंदन के रंग में रंगे, तो अंतर ने प्रार्थना की—

ऐसे रंग दे तू मुझको तेरे रंग में ओ पिया, और कोई रंग मुझ पे कभी लागे नहीं...
सच, प.पू. गुरुजी को भक्तों से कैसा लगाव है कि slip disc का दर्द भी उनके लिये कोई मायने नहीं रखता था। हम कहते हैं कि प.पू. गुरुजी के पास बैठ कर समय की सुध नहीं रहती, इसी





प्रकार प.पू. गुरुजी की जो उमंग और उत्साह था, उसे देख कर लगता था कि भक्तों को मूर्ति का सुख देने के लिये उन्होंने समय ही विस्मृत कर दिया। प.पू. गुरुजी के ऐसे दिव्य प्रेम का मोल तो हम कभी नहीं चुका सकते, पर एक दृढ़ निश्चय करें कि उन्होंने प्रभु भवित का हमें जो रंग लगाया है, उस पर बाह्य और भीतर के जगत का रंग हम छढ़ने न दें और इसके लिये उनका ही बल लेकर भजन करते रहें...

॥ स्वामिश्रीजी॥

चातुर्मास दौरान

[यानि दिनांक 29 जून, गुरुवार (देवशयनी एकादशी) से
23 नवंबर, 2023 गुरुवार (प्रबोधिनी एकादशी) तक]

भगवान् और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि 17 अगस्त, गुरुवार से 15 सितंबर, शुक्रवार तक एक बारी भोजन लें।
2. चातुर्मास दौरान हर महीने या सिर्फ सावन के महीने में—
मन्दिर के द्वापर यानि 60 व्यक्तियों के एक दिन के भोजन की सेवा भेंट रूप दें।
3. 29 जून, गुरुवार - नियम की एकादशी
7 सितंबर, गुरुवार - जन्माष्टमी
26 सितंबर, मंगलवार-जलझीलनी एकादशी
23 नवंबर, गुरुवार - कार्तिक शुक्ला एकादशी
इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति ‘महापूजा’ करवाएं।
5. रोज़ा सुबह या सायं ‘गुणातीत स्वरूपों’ की स्मृति सहित पंद्रह मिनिट कपालभाँति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका प्राणायाम करें।
6. चातुर्मास दौरान हमारे हिन्दी प्रकाशन ‘ब्रह्मविद्या’ एवं ‘मंत्रशक्ति’ पुस्तक का पारायण करते हुए उन बातों पर मनन-चिंतन करें।
7. सावन महीने के दौरान—
 - (क) ‘बॅप्स’ द्वारा प्रकाशित ‘भगवान् श्री स्वामिनारायण एक दिव्यजीवन गाथा’ के तीन पन्नों का नित्य पठन करते हुए पारायण करें।
 - (ख) ‘गुजराती’ भाषा जानते हों, वे ‘स्वामी की बातें’ या हिन्दीभाषी मुक्त ‘उपदेशमृत’ का पारायण करें।
 - (ग) ‘भगवत् कृपा’ के पिछले अंकों में आई संतों-मुक्तों की ज्ञानवार्ता का नियमित पठन करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।




**गुणातीत ज्योति की
ज्योतिर्धर प.पू. जसुबा
को
श्रद्धांजलि...**




सदा दिव्य साकार, स्वामी स्वरूप जसु बहन...

...खूब शूरवीरता से जगत में गये, वहाँ विजय प्राप्त की और जब एकांतिक धर्म सिद्ध करना ही परमपद माना, तो तुरंत गृहस्थाश्रम के बंधन भी इतनी ही शूरवीर भवित, संकल्प और प्रार्थना से तोड़ दिये तथा अपने संबंध में आने वाले को भी संकल्प और भजन से एकांतिक बना कर घर और देह को मंदिर बनाया...

गुरुहरि पप्पाजी

...भगवान को राजी करके (मूर्ति) सिद्ध कर लेने की शूरवीरता वाली जसु बहन ने जगत, देह और मन को धकेल कर सिर्फ भगवान को रखा और... गुणातीतभाव में ही मुझे रहना है, ऐसी तान रख कर सबको सत्संग कराया...

प.पू. सोनाबा

जसु बहन तो पप्पाजी तुल्य हैं, सबको आशीर्वाद दें ऐसे हैं और इनके आशीर्वाद सबको फलते हैं... उनका बड़े से बड़ा गुण है कि जिस जीव को स्वामिनारायण का आश्रित बनाती हैं, उसके साथ ओतप्रोत होकर, उसकी पूर्णहुति कराती ही हैं...

प.पू. बेन





जसु बहन ने साधना शुल्क करी और साथ ही उन्होंने दृढ़ता की कि मुझे साधना पूरी करनी ही है... इसलिये जीवन में जो भी प्रसंग बने, उसमें दिव्यभाव पकड़े रखा और जब दिव्यभाव नहीं रखा गया, तो शूरवीरता से प्रसंगों को टालने के लिये सकारात्मक अंतर्दृष्टि और भजन किया...

प.पू. ताराबेन

आप पूर्व के थे, इसलिये साक्षात् ब्रह्म की पहचान करके, प्रभु पर्याजी को सांगोपांग धार कर, उनकी अरिमता से जीते हो। सांप जैसे अपनी केंचुली उतारता है, वैसे ही इस लोक की परवाह किये बिना आपने परलोक का मार्ग अपनाया और निश्चित ध्येय प्राप्त किया। साथ ही अपने संबंध में आने वाले को प्रभु पर्याजी की पहचान करा कर, उन्हें पूर्णता तक पहुँचाया...

प.पू. ज्योतिबेन

1962 में जसु बहन का सत्संग में प्रवेश हुआ। गृहस्थ होने के बावजूद उनकी तमन्ना थी कि ताड़देव में रहती साधक बहनों जैसी प्राप्ति मुझे करनी है... तो पर्याजी ने उनके शुद्धिकरण में तनिक भी कमी नहीं रहने दी और गुणातीत समाज को एक मीठा, मधुर, स्नेह व शौर्यभरा सुंदर संगीत प्रसारित करता वाजिंत्र भेंट रूप दिया। जिनके ब्रह्मनाद से कई वैतन्य पर्याजी को प्राप्त कर सके हैं...

प.पू. हंसा दीदी

...आप अनादि की महामुक्तराज थीं, सो खूब ही शूरवीरता से गृहस्थाश्रम में से सरलता से प्रभु के प्रति की अडिग श्रद्धा से त्यागाश्रम ग्रहण किया। कृतनिश्चयी बन कर ध्येय सिद्ध करके अखिल गुणातीत समाज की गुणातीत वैतन्य जननी बन कर, हम सभी का जतन करके प्रत्यक्ष प्रभुजी पर्याजी के सिद्धांत से भगवान् भजने की राह को अति सरल-सुगम बनाया...

प.पू. देवी बहन

प.पू. जसु बहन के अमृतपर्व निमित्त प्रकाशित गुजराती पुस्तक 'प्रत्यक्षनी प्रभुता' में निहित गुणातीत स्वरूपों के उपरोक्त आशीर्वाद एवं गुरुहरि पर्याजी स्वरूप वरिष्ठ बहनों की शुभकामनायें उनका संक्षिप्त परिचय देती हैं...

दासत्व व साधुता के मूर्तस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज के चरण कमलों से प्रसादीभूत हुई अमरेली की पावन धरा पर, 1 नवंबर 1933 को श्वेतांबर जैन पू. मंगलजीभाई एवं पू. अंबा बहन के घर पू. जसु बहन का जन्म हुआ। 1946 में उनके पिता श्री मुंबई में आकर निवास करने लगे। बचपन से ही पू. जसु बहन शूरवीर व भक्तहृदय थे, इसलिये प्रभु को सर्वोपरि-सर्वस्व



માન કર, ઉનકી મૂર્તિ સે મન કી બાત કર લેતીં। નેપોલીયન બોનાપાર્ટ કી ભાઁતિ ઉનકે જીવન મેં Impossible શબ્દ કા સ્થાન હી નહીં થા। પ્રત્યેક કાર્ય કો કરને કે લિયે આત્મવિશ્વાસ સે વે હમેશા કહ્યો— I m possible... કોઈ ભી વ્યક્તિ ઉન્હેં કાર્ય સૌંપે, તો ‘હાઁ’ હી કહ્યો!

સમાજ કે રીતિ રિવાજોં કે અનુસાર, 1952 કી 14 ફરવરી કો પૂ. જયંતીભાઈ વનમાલીભાઈ દોશી કે સાથ વિવાહ કરકે ગૃહસ્થાશ્રમ મેં પ્રવેશ કિયા। લેકિન, અંતર મેં પ્રભુ પ્રાપ્તિ કી લગન થી, તો અપની નનદ પૂ. ઇચ્છા બહન દ્વારા ખામિનારાયણ ધર્મ કી અનુયાયી બનીં। ઉસમેં ભી ગુલુહરિ યોગીજી મહારાજ કી કૃપા સે ગુલુહરિ પપ્પાજી-કાકાજી કા સંબંધ હો ગયા ઔર સંપૂર્ણ કુટુંબ સમર્પિત હો ગયા। તબ બહનોં કે ભગવાન ભજને કી શુલ્ઘાત હો ચુકી થી। સો, તાડેદેવ મેં રહ કર, ગુલુહરિ પપ્પાજી-કાકાજી એવં પ.પૂ. સોનાબા કી નિશા મેં સાધના કર રહીં પ.પૂ. જ્યોતિ બહન, પ.પૂ. તારા બહન, પ.પૂ. હંસા દીદી ઔર પ.પૂ. દેવી બહન કા પ્રસંગ કરતે હુએ, પ.પૂ. જસુ બહન કે અંતર મેં ભી જીતેજી એકાંતિક ધર્મ સિદ્ધ કરને કી ઉમંગ હુઈ। તબ ધ્યેય કે પ્રતિ અફિગ નિષ્ઠા ઔર શૂરવીર સ્વભાવ ને સાથ દિયા। ફલસ્વરૂપ 1966 મેં જબ બહનોં કો સ્થાયી રૂપ સે ગુજરાત કે વિદ્યાનગર મેં રહને કે લિયે આના થા, તબ ઉનકે સંરક્ષક કે રૂપ મેં ગુલુહરિ પપ્પાજી ને પૂ. જયંતીભાઈ દોશી એવં પૂ. જસુ બહન કો પસંદ કિયા। અતઃ કુટુંબસહિત વે વિદ્યાનગર—પ્રભુકૃપા મેં ગુલુહરિ પપ્પાજી કે સાન્નિધ્ય મેં રહ કર સેવા-ભવિત કરને લગે। ગુલુહરિ પપ્પાજી કી આજ્ઞા સે પૂ. જસુ બહન ને પ.પૂ. હંસા દીદી કો ગુલુ સ્થાન પર વિરાજિત કિયા। સેવા કરતે-કરતે કર્ફ પ્રસંગોં મેં સે ગુજરે, લેકિન પ્રભુ પાને કી ગરજ કમ નહીં હુઈ, બાંલિક ઉસમેં વૃદ્ધિ હુઈ। ઇસલિયે 1970 મેં બ્રતધારી સાધક કી દીક્ષા લેકર ભગવા વર્ષ ધારણ કિયો। તથથ ઔર નિર્લેપ સાધના કરતે હુએ પ્રગતિ કી, સાંસારિક જીવન કે ચાર મુક્તોં મેં સે દો બેટિયોં કો પ્રભુ ભજને કે માર્ગ પર અગ્રસર કિયા। એક પુત્ર ઔર પુત્રી ને પ્રભુ કો પ્રાથમિકતા દેતે હુએ દાંપત્ય જીવન મેં પ્રવેશ કિયા ઔર... ગુલુહરિ પપ્પાજી કી પ્રસન્નતા પાકર, સ્વયં પ.પૂ. જસુ બહન ને ચાર બઢી બહનોં જૈસી સદગુલ સંત બહન કી પદવી પાઈ। તત્પશ્ચાત् ગુલુહરિ પપ્પાજી કે વચન સે દેશ ઔર વિદેશ મેં ગુણાતીત સમાજ કી સૌરભ ફેલાઈ। ગુણાતીત જ્યોત કે લિયે ચૈતન્ય મ્ાઁ, મહાશક્તિ કા પ્રવાહ થીં। સત્પુરુષ કે શ્રીચરણોં મેં ખુદ કો યાહોમ કરકે, ઇંદ્રિયોં-અંત:કરણ કે ભાવોં સે પરે હોકર વિજયી હોને કે સકારાત્મક વિચાર સે સ્વયં જીવન જિયા ઔર અન્યોં કે લિયે પ્રેરણા કા સ્નોત બનીં।

‘સર્વસ્વ માલ જે માન્યું...’, ‘તેં કરી કમાલ ઓ સ્વામી...’ ઔર ‘વિનવું છું સ્વામી પ્યારા...’ જૈસે સાધના માર્ગ કે કર્ફ ભજનોં સે સાધકોં કી ઝોલી ભર કર ચિરંજીવ બનીં, 90 વર્ષીય





प.पू. जसु बहन ने 122 दिन की लंबी बीमारी ग्रहण करने के उपरांत 21 मई 2023 को अक्षरधामगमन किया। देश-विदेश में रहते कई मुक्तों की जीवन आधार बनीं, प.पू. जसु बहन का पार्थिव देह दो दिन दर्शनार्थ रखा गया। 24 मई 2023 को पुष्पों से सुसज्जित ‘माहात्म्य रथ’ में श्री ठाकुरजी सहित पालकी में उन्हें विराजित करके, गुणातीत ज्योत से अनुशासित रीति से अंतिम दर्शन यात्रा आरंभ हुई। **अनुपम मिशन**-मोगरी के द्वार पर ब्रतधारी संत भाइयों एवं हरिभक्तों द्वारा पूजन एवं श्रद्धा पुष्प स्वीकार करते हुए रथ ‘पप्पाजी तीर्थ’ पहुँचा। यहाँ गुरुहरि पप्पाजी के समाधि स्थल ‘शाश्वत् धाम’ के पीछे ‘पुण्य तीर्थ’ की पावन भूमि पर अग्निवेदी तैयार की गई थी। केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा पूजन, अर्चन, हार, पुष्प अर्पण और गुणातीत समाज के ध्वज से सम्मानित किये जाने के बाद, मंत्रजाप के साथ अंत्येष्टि संस्कार के लिये ले जाया गया। संतभगवंत साहेबजी, प.पू. रतिकाका, प.पू. हंसा दीदी, प.पू. देवी बहन, सद्गुरु संत भाइयों-बहनों एवं हरिभक्तों के समक्ष मुखाहिन देकर, प.पू. जसुबा को नम अश्रुओं से भले स्थूल रूप से अलाविदा किया, लेकिन अनेक चैतन्यों की उन्होंने जिस प्रकार परवरिश की और प्रत्यक्ष प्रभु से जोड़ कर दिव्य जीवन की राह पर अग्रसर करके सुखी किया, अपने ऐसे मातृत्व व सत्पुरुष के प्रति अजोड़ समर्पण की मिसाल बन कर, वे सभी के दिलों में हमेशा रहेंगी...

ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 13.7.'23, गुरुवार — एकादशी, ब्रत
- (2) दि. 29.7.'23, शनिवार — एकादशी, ब्रत
- (3) दि. 12.8.'23, शनिवार — एकादशी, ब्रत
- (4) **दि. 15.8.'23, मंगलवार — स्वतंत्रता दिवस**
- (5) दि. 17.8.'23, गुरुवार — श्रावण मास-शिवपूजन प्रारंभ
- (6) दि. 27.8.'23, रविवार — पवित्रा एकादशी, ब्रत (श्री ठाकुरजी को ऐशम के हार पहनाने)
- (7) दि. 30.8.'23, बुधवार — पूर्णिमा, रक्षाबंधन
- (8) दि. 7.9.'23, गुरुवार — जन्माष्टमी
- (9) दि. 10.9.'23, रविवार — एकादशी, ब्रत
- (10) दि. 15.9.'23, शुक्रवार — श्रावण मास-शिवपूजन समाप्त
- (11) **दि. 19.9.'23, मंगलवार — गणेश चतुर्थी**
- (12) दि. 26.9.'23, मंगलवार — जलझीलनी एकादशी, ब्रत
- (13) दि. 28.9.'23, गुरुवार — अनंत चतुर्दशी



Install Our Mobile Applications

Bhaav Samadhi - APSM



Bhaav Samadhi



APSM

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guruji's Blessings



This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)



Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on WhatsApp.

Those who are not getting please save this number **7011521488**

Save the above number by name –

Our Temple Updates

After saving, please send Jay Swaminarayan message

on the above number and mention your name also.
Thanks!

आप में से अधिकांश मुक्त WhatsApp द्वारा मंदिर में होते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया

7011521488

नंबर को **Our Temple Updates** के नाम से save कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।

धन्यवाद!





ग्राम मेरे साथ होंगे, ग्राम बड़ी दूर होंगे...

R.N.I. 28971/77 (Air Mail) Bhagwaktripat Blimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— Printer, Publisher, Editor, SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY, DELHI

'Tat-dév', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A. 6, Community Centre, Noida Colony, DELHI-110 052